तिब्बत में चीन द्वारा मानवाधिकार हनन से व्यथित विश्व

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस (10 दिसबंर) के अवसर पर तिब्बत संबंधी विष्वव्यापी चर्चा ने तिब्बतियों एवं उनके समर्थकों-सहयोगियों में नई ऊर्जा भर दी है। वर्ष 1989 में 10 दिसबंर को ही तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाईलामा को शांति के क्षेत्र में योगदान के लिये नोबल पुरस्कार दिया गया था। विस्तारवादी चीन ने सन् 1959 में स्वतंत्र तिब्बत देष पर अवैध नियंत्रण कर लिया था। उस समय दलाईलामा ने तिब्बत से अपने हजारों समर्थकों-अनुयायियों के साथ भागकर भारत में शरण ली थी। वे किसी अन्य देष में नहीं गये। उनके अनुसार बौद्धदर्षन की भूमि होने के कारण भारत गुरुभूमि है। बौद्धदर्षन भारत से ही तिब्बत पहुँचा इसलिये तिब्बत चेला है। भारत गुरु और तिब्बत चेला। वे भारत को तिब्बतियों का दूसरा घर बताते हैं।

दलाईलामा तिब्बत के राज्याध्यक्ष और धर्माध्यक्ष दोनों थे। बाद में उन्होंने अपने सारे राजनैतिक अधिकार लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित तिब्बत सरकार को सौंप दिये। निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि पूरी तरह से निर्वाचित है, का संचालन हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिले में स्थित धर्मषाला से किया जाता है। दलाईलामा की प्रेरणा, प्रोत्साहन और आषीर्वाद से तिब्बती संघर्ष पूर्णतः शांति-अहिंसा का पक्षधर है। इस मामले में दलाईलामा के आदर्ष गांधीजी हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी कटु आलोचनाओं के बावजूद गांधी जी गरम विचारों के विरोधी रहे। उन्होंने उनका कभी साथ नहीं दिया। उन्होंने उन्हें अपने पास टिकने भी नहीं दिया। दलाईलामा इसी अहिंसक शांतिपूर्ण विचार के हैं। गांधीजी के हृदय में अंग्रेजों के प्रति घृणा का भाव नहीं था। इसी प्रकार दलाईलामा के हृदय में भी चीनियों के लिये करुणा है।

शांति अहिंसा के प्रति वास्तविक समर्पण के कारण ही दलाईलामा को शांति नोबल पुरस्कार मिला था। अभी 35वीं वर्षगाँठ है। प्रत्येक वर्ष 10 दिसबंर को नोबल पुरस्कार के लिये दलाईलामा की प्रषंसा की जाती है। उनके स्वस्थ एवं दीर्घजीवन हेतु विषेष पूजा-प्रार्थना की जाती है। तिब्बती संघर्ष तथा तिब्बती समाज के लोकतंत्रीकरण में प्रेरणापूर्ण योगदान के लिये उनके प्रति भावपूर्ण कृतज्ञता प्रकट की जाती है। साथ ही तिब्बत में सभी प्रकार के अधिकारों के हनन के लिये चीन की भत्र्सना की जाती है। चीन विरोधी संघर्ष को और तेज करने का संकल्प लिया जाता है।

तिब्बत की आंतरिक स्थिति अत्यन्त चिंताजनक है। इसी दिसबंर में आम्दो प्रांत के त्सोंगा गाँव के बीस तिब्बती चीन सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। उनमें त्सोंगा गाँव के मुखिया भी शामिल थे। चीन सरकार का आरोप था कि वे सभी अपनी मातृभाषा तिब्बती को मजबूत करने के लिये अभियान चला रहे थे। चीनी हिरासत में अमानवीय प्रताड़ना के कारण मुखियाजी का बलिदान हो गया। चीन सरकार की नीति तिब्बती भाषा की जगह चीनी भाषा थोपने की है। वह अध्ययन-अध्यापन के लिये तिब्बती माध्यम की जगह चीनी माध्यम ला रही है। उच्च षिक्षा के पाठ्यक्रम एवं परीक्षा से तिब्बती भाषा को हटाया जा रहा है।

चीन सरकार तिब्बती बच्चों को चीनी बोर्डिंग स्कूलों में डाल रही है। वे बच्चे वहाँ चीनी माध्यम से पढ़ाई करते हैं। उन्हें चीन के बारे में पढ़ाया जाता है। तिब्बत के बारे में उन्हें नहीं पढ़ाया जाता। इस प्रकार तिब्बती बच्चे भी चीनी मानसिकता से भरे होते हैं तथा तिब्बती पहचान एवं कला, संस्कृति, इतिहास तथा गौरवपूर्ण धरोहर से घृणा करने लगते हैं।
तिब्बतियों द्वारा संचालित वैसे सभी षिक्षण संस्थान चीन सरकार ने बंद कर दिये हैं जिनमें तिब्बती भाषा एवं संस्कृति के उत्थान पर बल दिया जाता है। इनमें निजी विद्यालय भी शामिल हैं। चीन सरकार की साजिषपूर्ण नीति ऐसे ही जारी रही तो तिब्बती पहचान समाप्त हो जायेगी। चीन सरकार ने अनेक महत्वपूर्ण तिब्बती नामों को हटाकर चीनी नाम दे दिये हैं। इसका षिकार विष्वप्रसिद्ध लारूंगर बौद्ध षिक्षण संस्थान भी है। यहाँ उच्च कोटि की सामग्री उपलब्ध है। इससे अध्ययन-अध्यापन तथा शोध की गुणवत्ता उच्चस्तरीय है। इस षिक्षण संस्थान में चीन सरकार ने लगभग पाँच सौ सैनिक लगा रखे हैं। यहाँ पढ़ने-पढ़ाने वाले तथा शोध करने वाले बौद्ध भिक्षु हैं। उन पर भी सैनिकों का कड़ा पहरा है। इस प्रकार लारूंगर में शैक्षणिक वातावरण का स्थान सैनिक आतंक ने ले लिया है।

तिब्बत में जारी चीनी अत्याचार से तिब्बत समर्थक भारतीय बहुत व्यथित हैं। अरुणाचल प्रदेष से भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा सदस्य माननीय तापिर गाओ ने एक अन्य गंभीर विषय को संसद में उठाया है। उन्होंने बताया कि दलाईलामा के पुनर्जन्म का निर्धारण स्थापित बौद्ध परंपरानुसार उचित प्रक्रिया को अपनाकर बौद्ध धर्मगुरु तथा विद्वान करेंगे। इसमें साम्राज्यवादी चीन का हस्तक्षेप अस्वीकार्य है। तिब्बती धर्मगुरु के पुनर्जन्म संबंधी प्रक्रिया में हर स्तर पर सिर्फ तिब्बती रीतिनीति को अपनाया जायेगा।

दलाईलामा के योगदान की प्रषंसा करते हुए तापिर गाओ ने उन्हें भारत रत्न दिये जाने की मांग की। दलाईलामा और तिब्बती लोग भारतीय समाज में समरस हो गये हैं। दलाईलामा हर समय भारतीय ज्ञान की प्राचीन नालंदा परंपरा का गौरवगान करते हैं। भारतीय संस्कृति, साहित्य, आध्यात्मिक इतिहास तथा पर्यावरण के संरक्षण एवं विकास में तिब्बती समुदाय भारतीयों के समान ही रचनात्मक भूमिका निभा रहा है। भारत स्थित समस्त तिब्बती संस्थान इस दिषा में सदैव तत्पर हैं। चीन के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को ठीक रखने के नाम पर दलाईलामा को भारत रत्न से सम्मानित करने में विलम्ब ठीक नहीं है।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ ०१. परम पावन दलाई लामा के किन्नौर के भक्तों ने उनके लिए दीर्घायु प्रार्थना की

०७ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु प्रार्थना समारोह के लिए धर्मशाला स्थित मुख्य तिब्बती मंदिर- सुगलागखांग को ०६ दिसंबर की सुबह ही गेंदा फूल की मालाओं से सजाया गया था। सुबह सुबह ही सूरज की सतरंगी रोशनी ने वहां साफ नीले आसमान के सामने खड़ी पर्वत चोटियों को चमकदार बना दिया था।

परम पावन जब अपने आवास के द्वार से निकले तो किन्नौर के लोगों की ओर से उनके प्रतिनिधिद्वय- गिबोंग रिनपोछे और लोचन रिनपोछे ने उनका स्वागत किया। मंदिर प्रांगण के एक ओर किन्नौरी पुरुष और महिला ने परम पावन का पारंपरिक तरीके से स्वागत किया और उन्हें सम्पा और दही भेंट किया।

गलियारे में किन्नौरी महिलाएं अपने खूबसूरत परिधान, समृद्ध पैटर्न वाले शॉल और पूरे सिर को ढंकने वाला पोशाक पहने खड़ी थीं। उन्होंने परम पावन के स्वागत में गीत गाए। परम पावन ने भी हाथ हिलाकर दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े लोगों का अभिवादन किया और गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए उनकी ओर देखा। इस बीच, मंदिर में एक मंत्र का पाठ किया गया, जिसमें आर्य तारा के मंत्र को परम पावन के लंबे नाम-मंत्र के साथ जोड़ा गया है।

इस दीर्घायु समारोह की अध्यक्षता परम पावन ने की। परम पावन के आसन ग्रहण करने के पश्चात उनके सम्मुख गिबोंग रिनपोछे उपस्थित हुए। गिबोंग परम पावन के शिक्षकों में से एक रहे गेन रिग्जिन तेनपा के अवतार कहे जाते हैं। परम पावन की बाईं ओर लोचेन रिनपोछे बैठे थे, तथा उनके दाईं ओर उनके एक अन्य शिक्षक खुन्नू लामा तेनजिन ग्यालत्सेन के नवीन अवतार बैठे थे। प्रार्थना सभा में इन लामाओं के साथ हिमाचल प्रदेश के ऊपरी इलाके किन्नौर से आए १८०० लोग शामिल हुए।

प्रार्थना की शुरुआत 'तीन भागों में प्रार्थना' से हुई, जिसके बाद 'सात अंगों की प्रार्थना' हुई। प्रार्थना के बाद इन आगत अतिथियों ने चाय और खीर का प्रसाद ग्रहण किया। एकत्र हुए अन्य लोगों को भी इस प्रसाद को वितरित किया गया। इसके बाद किन्नौरियों को प्रसाद के तौर पर पवित्र मूर्तियों तथा धर्मग्रंथों की पुस्तकों के साथ विदा किया गया जो वहां मंदिर से जुलूस के रूप में निकले।

गिबोंग रिनपोछे ने परम पावन को ज्ञान, वाणी तथा मन के शरीर के चित्रण के साथ ब्रह्मांड का एक मंडल भेंट किया। लोचेन रिनपोछे ने दीर्घायु कलश प्रस्तुत किया, जिसे आर्य तारा की इच्छा-पूर्ति चक्र के अनुष्ठान के दौरान आशीर्वाद दिया गया था। साथ ही उन्होंने दीर्घायु के लिए अमृत और गोलियाँ भी चढ़ाईं। उनके बाद खुनु लामा जंगचुब न्यिमा और गा रिनपोछे ने भी अपनी ओर से भेंट अर्पण किए। परम पावन ने हर एक को बुद्ध की एक प्रतिमा भेंट की। परम पावन की दीर्घायु के लिए उनके दो शिक्षकों, लिंग रिनपोछे और त्रिजांग रिनपोछे द्वारा रचित प्रार्थना का पाठ किया गया। प्रार्थना में एक छंद यह भी शामिल है:

हम उत्कट भक्ति के साथ यह प्रार्थना करते हैं:
कि बर्फ की भूमि के रक्षक तेनजिन ग्यात्सो युगों-युगों तक जीवित रहें।
हम सब पर वह अपना आशीर्वाद बरसाएं ताकि हमारी आकांक्षाएं बिना किसी बाधा के पूरी हों।

और आगे कहते हैं:
हम प्रार्थना करते हैं कि इस प्रार्थना की शक्ति से
उत्कट भक्ति और विनम्रता से भरे हृदय से व्यक्त,
बर्फ की भूमि के हृदय का शरीर, वाणी और मन,
सर्वोच्च ङावांग लोबसांग तेनजिन ग्यात्सो,
अविनाशी, अविचल और अविरल हो;
वे युगों- युगों तक जीवित रहें,
हीरे के सिंहासन पर बैठे, क्षय और विनाश से परे।
मण्डली को संबोधित करते रहें,

इसके बाद परम पावन ने अपना प्रवचन शुरू किया:

उन्होंने कहा, 'हम आज यहां एक ऐसी जगह पर इकट्ठे हुए हैं, जहां बौद्ध धर्म में रुचि रखने वाले लोग खुशी और आनंद के साथ आ सकते हैं। मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं जो अमदो में पैदा हुआ और ल्हासा तक पहुंचा, जहां मैंने महान मठवासी विश्वविद्यालयों और जोखांग मंदिर के प्रांगण में पूर्णता की परीक्षाएं दीं।

'मुझे अपने वरिष्ठ शिक्षक लिंग रिनपोछे से मौखिक ज्ञान, पथ प्रदर्शन और सशक्तिकरण और कई शिक्षाएं मिली हैं, जिनका मैं बहुत आभारी हूं। वे चीजों को हल्के में नहीं लेते थे और अक्सर काफी सख्त होते थे, लेकिन जब पढ़ाने की बात आती थी तो वे बहुत निष्ठा और समर्पण के साथ पढ़ाते थे। मैंने उनसे दर्शनशास्त्र का का ज्ञान प्राप्त किया है। त्रिजांग रिनपोछे ने भी मेरे ऊपर कृपा की और करुणा के साथ पढ़ाया।

'इसके अलावा, मुझे कई ऐसे लोगों की सहायता मिली जो मुझसे विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद करते रहते थे। उनमें से विद्वान लेकिन विनम्र देयांग सेनशब एक थे। उनके साथ वाद-विवाद करके मैंने खूब लाभ उठाया। ङोडुप सोगनी वाद-विवाद के सटीक बिंदु को बड़ी कुशलता से पकड़ लेते थे। उन्होंने सही मायनों में मेरी बहुत मदद की।

'अब, हम लंबे समय से निर्वासन में हैं। लेकिन इसी निर्वासन में हमें अवसर भी मिले हैं। अगर हम निर्वासन में नहीं आए होते तो मुझे संदेह है कि मैं इतनी गहराई से पढ़ाई कर पाता। मैं तरह-तरह के अनुष्ठानों और ऐसी ही अन्य चीजों में उलझा रहता।

'तिब्बत के अंदर और बाहर रहने वाले तिब्बतियों ने मुझ पर बहुत विश्वास जताया है और मैंने भी उस विश्वास पर खरा उतरने की पूरी कोशिश की है। इसी का परिणाम है कि आज मठों और भिक्षुणियों के समुदाय और किन्नौर के आम समुदाय के सदस्य श्वेत तारा नामक इच्छा-पूर्ति चक्र के आधार पर मेरी लंबी उम्र के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।'

जब परम पावन के दिए प्रवचन का हिंदी में अनुवाद किया जा रहा था, तब उन्होंने किन्नौरी टोपी पहन ली और मुस्कुराए। उन्होंने दोहराया कि यद्यपि निर्वासन में आने का अर्थ अपने देश से बाहर जाना था, लेकिन इस अनुभव ने किन्नौरी, तिब्बती और दुनिया भर में उनके प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता गया और बड़ी संख्या में लोगों ने उनकी बातों की सराहना की।

उन्होंने आगे कहा, 'मनुष्य होने के नाते, हमें गरिमा, ईमानदारी और सौहार्द के

साथ जीना चाहिए। मनुष्य होने के नाते हमारी पहली प्राथमिकता अतीत या भविष्य के जीवन की चिंता किए बिना दूसरों की मदद करने में होनी चाहिए। यह एक ऐसा विचार है, जिसे बौद्ध और गैर-बौद्ध- दोनों ही तरह के मताबलंबी अपना और पालन कर सकते हैं।

'मैं विनम्रता और शांतिपूर्ण मन विकसित करने की शिक्षा देता हूं। अगर हम प्रेम और करुणा प्राप्त कर सकते हैं, तो इससे दुनिया भर के लोगों के बीच सद्भाव पैदा होगा। अगर हम ऐसा करते हैं तो हमारा जीवन उपयोगी और सार्थक होगा। दूसरी ओर 'हम' और 'वे' के आधार पर लड़ना दुर्भाग्यपूर्ण बात है। दूसरों के प्रति प्रेम और करुणा के साथ अपने जीवन को उनके साथ साझा करना तथा मानवता की एकता की भावना रखना हमारे जीवन जीने का सबसे अच्छा तरीका है।

'इस धरती पर रहने वाले मनुष्य के रूप में हमें ईमानदार और सच्चा होना चाहिए। हमें अपने अंदर एक-दूसरे के प्रति प्रेम और करुणा विकसित करनी चाहिए तथा दुश्मनी करने से बचना चाहिए। मुझे लगता है कि मैंने दूसरों को इसका पालन करने में मदद करने में कुछ योगदान दिया है और आपने भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है - जिसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।'

परम पावन ने घोषणा की कि धर्म का सबसे अच्छा उपहार बोधिसत्व व्रत जाग्रत करना है। उन्होंने कहा कि वे हर सुबह उठते ही बोधिचित्त के जाग्रत मन पर ध्यान करते हैं और उसके तुरंत बाद वे अपने बोधिसत्व व्रत को नवीकृत करते हैं।

उन्होंने कहा कि निर्वासन में उन्हें कई उतार-चढ़ावों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं से शक्ति प्राप्त की है जो एक अच्छे हृदय या दूसरों को लाभ पहुंचाने का एक दयालु इरादा रखने के विचार को पोषित करने की बात करती है।

उन्होंने कहा, 'धर्म हमारे मन को वश में करने और दूसरों की मदद करने के इरादे से बड़ा दिल विकसित करने के बारे में है। यहां हम बुद्ध की भूमि पर हैं जहां हम बोधिसत्व व्रत ले सकते हैं और अपने दैनिक जीवन के हिस्से के रूप में बोधिचित्त का पालन कर सकते हैं।

'जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मैं रोज अपने बोधिसत्व व्रत को नवीकृत करता हूं। मुझे लगता है कि यह मुझे दूसरों के लिए काम करने के लिए प्यार, करुणा और साहस देता है। यह मुझे दूसरों की भलाई के लिए खुद को समर्पित करने में मदद करता है। यही कारण है कि यह मौलिक रूप से फायदेमंद है।

'बुद्ध शाक्यमुनि का निधन २५०० साल से भी पहले हो गया था और फिर भी उनकी शिक्षाएं तरोताजा हैं। यह आज भी प्रासंगिक हैं। नतीजतन, आज बौद्ध धर्म से कोई पूर्व संबंध या रुचि न रखने वाले लोग भी इसमें रुचि ले रहे हैं। यहां तक कि चीन में भी, जहाँ धर्म का कड़ा विरोध हुआ है, लोगों की बौद्ध धर्म में आस्था दृढ़ हुई है।

'तो, आइए अपने दिल में खुशी के साथ बोधिसत्व व्रत लेने के इस अनमोल अवसर का लाभ उठाएं। यह महत्वपूर्ण कार्य होगा। कृपया सोचें कि हम कितने भाग्यशाली हैं।'

परम पावन ने बताया कि सोलह अर्हतों, छह अलंकारों और दो सर्वोच्च तिब्बती धर्म राजाओं और सभी तिब्बती बौद्ध परंपराओं के गुरुओं से घिरे बौद्ध धर्म की कल्पना कैसे करें। उन्होंने मण्डली से कहा कि वे उनके बाद तीन बार निम्नलिखित श्लोकों का पाठ करें और प्रतिदिन उसी प्रकार व्रत लेने का प्रयास करें, जैसा कि वे स्वयं करते हैं।

मैं त्रिरत्नों की शरण ग्रहण करता हूं;
मैं अपने प्रत्येक गलत काम को स्वीकार करता हूं।
मैं सभी प्राणियों के गुणों से आनन्दित होता हूं।
मैं बुद्धत्व की अवस्था को हृदय से ग्रहण करता हूं।
मैं तब तक के लिए शरण ग्रहण करता हूं, जब तक कि मैं प्रबुद्ध न हो जाऊ
बुद्ध, धर्म और संघ की शरण ग्रहण करता हूं,
अपने और दूसरों के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए
मैं जागृत मन का विकास करता हूं।
सर्वोच्च ज्ञानोदय की आकांक्षा विकसित करने के बाद,
मैं सभी संवेदनशील प्राणियों को अपने अतिथि के रूप में आमंत्रित करता हूं,
मैं आनंदमय सर्वोच्च ज्ञानवर्धक अभ्यास करूंगा।
मैं सभी संवेदनशील प्राणियों को लाभ पहुंचाने के लिए बुद्ध बन सकूं।
उसके बाद परम पावन ने बुद्ध, अवलोकितेश्वर, तारा और गुरु रिनपोछे के मंत्रों का जाप किया।

उन्होंने उन सभी लोगों को धन्यवाद दिया जो आज उनकी लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करने में शामिल हुए। उन्होंने उन्हें बताया कि उनके सपनों में आया है कि वे एक सौ दस साल से अधिक जीवित रहेंगे। उनकी इस उद्घोषणा का स्वागत वहां उपस्थित अनुयायियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से किया।

परम पावन ने एक बार फिर अपने पूरे जीवन का एक समीक्षात्मक सिंहावलोकन किया। उन्होंने सिलिंग में अपने जन्म, मध्य तिब्बत में अपने अध्ययन, चीन की अपनी यात्रा और निर्वासन में आने को याद किया। उन्होंने पुष्टि की कि विभिन्न उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए यह बोधिचित्त ही है जिसने उन्हें मन की शांति, एक अच्छा दिल, साहस और आंतरिक शक्ति दी है।

दीर्घायु समारोह का समापन 'सत्य के शब्दों की प्रार्थना' के पाठ के साथ हुआ, जिसे परम पावन ने १९६० में रचा था। प्रार्थना इस पंक्तियों के साथ समाप्त होती है:

इस प्रकार, रक्षक चेनरेज़िग ने बुद्ध और बोधिसत्वों के समक्ष
बर्फ की भूमि को पूरी तरह से अपनाने के लिए विशाल प्रार्थना की;
इन प्रार्थनाओं के शुभ परिणाम अब शीघ्र ही प्रकट हों।
शून्यता और सापेक्ष रूपों की गहन अन्योन्याश्रयता से,
तीन रत्नों और उनके सत्य वचनों में महान करुणा के बल के साथ,
कर्मों और उनके फलों के अचूक नियम की शक्ति के माध्यम से,
यह सत्यपूर्ण प्रार्थना निर्बाध और शीघ्र पूर्ण फलदायक हो।

◆ ०२. जे. सोंगखापा के निधन का स्मरण दिवस

२५ दिसंबर, २०२४

थेक्चेन चोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज २५ दिसंबर की दोपहर कड़कड़ाती, चमकदार ठंड के दिन सुबह सुबह परम पावन

दलाई लामा अपने निवास से मुख्य तिब्बती मंदिर- सुगलागखांग की ओर चले, जहां लगभग ३५०० लोग जे. सोंगखापा के निधन का स्मरण दिवस या गंडेन नगा चो मनाने के लिए उपस्थित थे। मंदिर प्रांगण से होकर मंदिर के चारों ओर से परिक्रमा करते हुए उन्होंने मुस्कुरा कर भीड़ में मौजूद लोगों की ओर हाथ हिलाया।

मंदिर के अंदर परम पावन ने बुद्ध की मूर्ति और लामा चोपा योग्यता क्षेत्र की एक बड़ी थंगका पेंटिंग के सामने अपना आसन ग्रहण किया। उनकी दाईं ओर लिंग रिनपोछे और नामग्याल मठ के लोबपोन विराजमान हुए। उनकी बाईं ओर नामग्याल मठ के मठाधीश और सेरा-मे मठ के पूर्व मठाधीश आसीन हुए।

समारोह की शुरुआत 'तीन सातत्यों में प्रार्थना' के पाठ से हुई, जिसके बाद 'आध्यात्मिक गुरु को अर्पण', 'लामा चोपा', मंडल अर्पण, बोधिसत्व और तांत्रिक प्रतिज्ञाओं की समीक्षा, स्वीकारोक्ति के छंद और फिर जे. सोंगखापा की स्तुति में नौ पंक्ति की 'मिग-से-मा' प्रार्थना हुई।

इसके बाद जमयांग चोजे द्वारा 'जे. सोंगखापा की गुप्त जीवनी' का जाप किया गया। इसके बाद 'पूर्वी पर्वत की चोटी से' स्तुति की गई और सातवें दलाई लामा की संक्षिप्त गुरु-योग प्रार्थना की गई, जिसमें जे. रिनपोछे को अपने लामा के समान ही आमंत्रित किया गया।

'सोग', भोज अर्पण के बाद 'स्प्रींग सॉंग (वसंत रानी) का गीत' गाया गया। तत्पश्चात्, 'आध्यात्मिक गुरु को अर्पण' पर लौटते हुए मार्ग के विभिन्न चरणों की समीक्षा की गई।

इसके बाद 'मंजुश्रीनामसंगीति', 'मंजुश्री के नामों का जप' के साथ ही गुह्यसमाज, चक्रसंवर, वज्र-भैरव और कालचक्र की स्तुति के श्लोकों का पाठ किया गया। इसके बाद गुह्यसमाज, चक्रसंवर, वज्र-भैरव और कालचक्र की इष्ट सिद्धि करनेवाली प्रार्थनाएं की गईं।

'ऑफरिंग टू द स्प्रिच्यूल मास्टर (आध्यात्मिक गुरु को अर्पण)' का पाठ समाप्त हुआ। इसके बाद समर्पण प्रार्थनाएं जिसमें वज्र-भैरव तंत्र की शुभ प्रार्थना, उनके दो शिक्षकों द्वारा परम पावन की दीर्घायु के लिए प्रार्थना, 'सत्य के शब्द' और समंतभद्र प्रार्थना के समर्पण छंद शामिल हैं- का गायन हुआ।

अंत में 'सोंगखापा की शिक्षाओं के प्रसार के लिए प्रार्थना' की बारी आई, जिसमें कहा गया था कि 'आपने शून्यता और करुणा को मिलाकर मार्ग स्पष्ट किया' जिसे दिलगो खेंसे रिनपोछे ने परम पावन से लिखने का अनुरोध किया था और महान पांचवें दलाई लामा के लेखन से दोलग्याल पर नियंत्रण करने की अपील की।

इसके बाद परम पावन अपने आसन से उठे और कुछ क्षणों तक मंदिर में उपस्थित भिक्षुओं पर दृष्टिपात करते रहे। इस समय उनके चेहरे पर खुशी के भाव थे। उन्होंने भिक्षुओं का अभिवादन किया। इधर, जब मंत्र-गुरु ने सोंगखापा के गुणों के उत्सव में 'मिग-त्से-मा' प्रार्थना के पाठ में मंडली का नेतृत्व किया, उधर परम पावन मंदिर से बाहर निकले और मुस्कुरा कर हाथ हिलाते हुए लिफ्ट की ओर चले गए। मंदिर प्रांगण के किनारे पर वे एक गोल्फ कार्ट में सवार हुए जो उन्हें उनके निवास स्थान पर वापस ले गई।

◆ ०३. पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक संवेदना

२७ दिसंबर, २०२४

थेकचेन चोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन की खबर मिलने पर परम पावन दलाई लामा ने उनकी विधवा श्रीमती गुरशरण कौर को पत्र लिखकर अपना दुख व्यक्त किया है। उन्होंने लिखा, 'मैं उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में याद रखूंगा और इस दुखद समय में आपको और आपके परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।'

'लंबे समय के बाद जब भी हम मिलते थे, मैं उनके चिंतन-मनन और अच्छी सलाह की गहराई से सराहना करता था। मुझे लगता था कि वह मेरे लिए एक बड़े भाई की तरह थे।'

'आपके पति दूसरों की मदद करने की तीव्र इच्छा से प्रेरित थे। उन्होंने भारत के विकास और समृद्धि, विशेष रूप से इसके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे भारतीय लोगों की स्थिति में सुधार हुआ। वह तिब्बती लोगों के भी अच्छे मित्र थे।'

परम पावन ने अपने पत्र का अंत करते हुए लिखः 'हम इस बात पर प्रसन्न हो सकते हैं कि ९२ वर्षों तक उन्होंने वास्तव में सार्थक जीवन जिया। उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।'

◆ ०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने तिब्बती कलाकार महोत्सव के समापन समारोह में भाग लिया

०२ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ०१ दिसंबर २०२४ को धर्मशाला में तीन दिवसीय तिब्बती कलाकार महोत्सव के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

यह महोत्सव तिब्बत की कहानियों को दुनिया भर में प्रसारित करने में लेखकों से लेकर संगीतकारों तक के कलाकारों के अमूल्य योगदान का सम्मान करता है। इसका आयोजन तिब्बती लेखक और कवि भुचुंग डी. सोनम द्वारा तिब्बत फंड के समर्थन से किया जाता है। भुचुंग तिब्बतराइट्स के सह-संस्थापक भी हैं।

समापन समारोह के दौरान अपने संबोधन में सिक्योंग ने कहा कि पिछले छह दशकों के निर्वासन में तिब्बती समुदाय ने परम पावन दलाई लामा के उदार और दूरदर्शी नेतृत्व में अपने जीवन के सभी पहलुओं में महत्वपूर्ण प्रगति की है। सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती लोग और संगठन तिब्बत के मुद्दे को आगे बढ़ाने वाली किसी भी पहल और अभियान को किसी भी माध्यम से आयोजित करने वालों की हमेशा सराहना करते हैं। इन पहलों में कला के सभी रूप शामिल हैं। सिक्योंग ने आगे कहा कि केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) आयोजकों या कार्यक्रमों की राजनीतिक संबद्धता या स्थिति की परवाह किए बिना इन प्रयासों का पूरा समर्थन करता है।

चूंकि यह अपनी तरह का पहला उत्सव है, इसलिए सिक्योंग ने इस पहल के लिए आयोजक भुचुंग डी. सोनम और तिब्बत फंड के अध्यक्ष बॉब एंकरसन के प्रति

आभार व्यक्त किया और भविष्य में इसी तरह के कार्यक्रमों को जारी रखने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया।

तीन दिनों के इस समारोह के दौरान बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए, जिनमें तिब्बती सांसद, सीटीए अधिकारी, तिब्बती कलाकार, कला प्रेमी, मीडियाकर्मी, धर्मशाला स्थित तिब्बत निवासी, पर्यटक और अन्य लोग भी शामिल थे। इसमें दुनिया के विभिन्न हिस्सों से तिब्बती लेखकों, गायकों और संगीतकारों ने भाग लिया।

◆ ०५. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का अमेरिका में पांचवां दिन

११ दिसंबर, २०२४

वाशिंगटन डीसी। निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग के अमेरिका दौरे के पांचवें दिन १० दिसंबर २०२४ को कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम पहले से निर्धारित थे। दिन की शुरुआत सिक्योंग द्वारा 'अमेरिकी नीति और रणनीति में तिब्बत के भविष्य पर एक वार्तालाप' विषयक चर्चा में भाग लेने के साथ हुई। इस कार्यक्रम में स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी और रिचर्ड गेरे ने भी अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए। चर्चा में तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक और अमेरिका में अंडर सेक्रेटरी उजरा ज़ेया भी उपस्थित थीं। उन्होंने द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समन्वय के माध्यम से तिब्बतियों का समर्थन करने के प्रशासन के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने निरंतर कार्रवाई की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, 'हम जानते हैं कि सार्थक स्वायत्तता के लिए बातचीत के ज़रिए समझौता होने तक और काम किया जाना बाकी है। जब तक कि हर जगह तिब्बती अपने मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता तक पहुँच नहीं बना लेते और तिब्बती अपनी इच्छानुसार अपने धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र नहीं महसूस करते और अपनी भाषा नहीं बोल सकते, तब तक और काम किया जाना बाकी रहेगा।'

तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक ने आगे परम पावन दलाई लामा के हवाले से एक खुशहाल और शांतिपूर्ण भविष्य की दृष्टि विकसित करने और इसे साकार करने के प्रयास करने के महत्व पर बल दिया।

इसके बाद, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने उपस्थित श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी और रिचर्ड गेरे को धन्यवाद दिया। सिक्योंग ने इन दोनों का परिचय 'तिब्बतियों के समर्थन के दो महान स्तंभ' के रूप में दिया। उन्होंने अवर सचिव उजरा ज़ेया को तिब्बत के प्रति उनके दृढ़ समर्थन और सहायता के लिए अपना हार्दिक आभार भी व्यक्त किया।

थिंक टैंकों के महत्व पर जोर देते हुए, सिक्योंग ने विल्सन सेंटर में एक बैठक में भाग लिया। यह वाशिंगटन, डीसी स्थित कांग्रेस द्वारा अपने काम के लिए नामित थिंक टैंक है और नीति निर्माताओं को वैश्विक मामलों पर निष्पक्ष सलाह प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

इस बैठक में सिक्योंग ने विल्सन सेंटर के अध्यक्ष मार्क ए. ग्रीन और पूर्व यूएसएआईडी प्रशासक के साथ-साथ कई उल्लेखनीय उपस्थित लोगों के साथ बातचीत की। इनमें महामहिम इवान ड्यूक मार्केज़ (विल्सन सेंटर फेलो और कोलंबिया के पूर्व राष्ट्रपति), प्रतिनिधि इलियाना रोस-लेहटिनन (विल्सन सेंटर जीएसी और कांग्रेस की पूर्व सांसद), एडी एसेवेडो (विल्सन सेंटर के चीफ ऑफ स्टाफ और वरिष्ठ नीति सलाहकार), जूली वाडलर (विल्सन सेंटर विकास निदेशक), डॉ रॉबर्ट डेली (चीन और अमेरिका पर विल्सन सेंटर के किसिंजर संस्थान के निदेशक), जॉन थॉन माजोक (शरणार्थी और जबरन विस्थापन पहल के निदेशक), शिहोको गोटो (विल्सन सेंटर में हिन्द- प्रशांत प्रोग्राम के निदेशक) और लुकास मायर्स (हिन्द- प्रशांत प्रोग्राम के वरिष्ठ सहयोगी) शामिल थे।

इसके बाद, सिक्योंग ने तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी) बोर्ड की बैठक में भाग लिया, जहां उनसे पुनर्जन्म के मुद्दे के बारे में पूछा गया। इस बारे में अपनी तर्कपूर्ण नीति को दोहराते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उन्होंने ऐसे आयोजनों के लिए काशाग की तैयारियों का भी खाका पेश किया, जिसमें किसी भी अप्रत्याशित परिस्थिति से निपटने के लिए एक व्यापक निर्देशिका का मसौदा तैयार करना भी शामिल है।

दिन के अंत में सिक्योंग ने रिचर्ड गेरे, प्रतिनिधि नामग्याल चोएडुप, आईसीटी के भुचुंग के. शेरिंग और आईसीटी सरकारी संबंधों की देखरेख करने वाले फ्रांज मैटनर के साथ मिलकर सीनेटर जेफ मर्कले से शिष्टाचार भेंट की, जो रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट के मूल प्रायोजक हैं और इसकी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

०६. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक और प्रबंधन एवं संसाधन उप सचिव से मुलाकात की

१५ दिसंबर, २०२४

अमेरिका। निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग ने १२ दिसंबर को अपने दिन की शुरुआत संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रबंधन एवं संसाधन उप सचिव रिचर्ड आर. वर्मा के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक करने से की। चर्चा के दौरान वर्मा ने परम पावन दलाई लामा के स्वास्थ्य, खासकर उनके हाल ही में हुए घुटने के ऑपरेशन के बाद की स्थिति के बारे में जानकारी ली। भारत में अमेरिकी राजदूत के रूप में अपने पिछले अनुभव के आधार पर वर्मा ने तिब्बती मुद्दों की गहरी समझ का प्रदर्शन किया।

इस बैठक के बाद अमेरिकी नागरिक सुरक्षा, लोकतंत्र और मानवाधिकार के अवर सचिव और तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक उजरा ज़ेया के साथ एक और महत्वपूर्ण बैठक हुई। एक घंटे की बैठक में प्रतिनिधि नामग्याल चोएडुप, अवर सचिव कार्यालय में वरिष्ठ सलाहकार एलिसन बार्टेल और पीआरएम (जनसंख्या, शरणार्थी और प्रवासन ब्यूरो) और डीआरएल (लोकतंत्र, मानवाधिकार और श्रम ब्यूरो) के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बातचीत के दौरान सिक्योंग ने तिब्बती मुद्दे के प्रति उनके अटूट समर्थन और प्रतिबद्धता के लिए अवर सचिव ज़ेया को धन्यवाद दिया।

इसके बाद सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ऐतिहासिक कार्यक्रम, 'मोनलाम ग्रैंड तिब्बती डिक्शनरी: प्राचीन ज्ञान के लिए आधुनिक तकनीक' में भाग लिया, जहां गेशे लोबसांग मोनलम ने वाशिंगटन-डीसी में कांग्रेस के पुस्तकालय के माध्यम से अमेरिकी लोगों को २२३-खंड में मोनलाम ग्रैंड तिब्बती डिक्शनरी प्रस्तुत की। यह दुनिया का सबसे बड़ा शब्दकोश माना जा रहा है। अपने संबोधन में गेशे

मोनलम ने तिब्बती भाषा और इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और आगे बढ़ाने में एआई की परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला।

बाद में सिक्योंग ने सीनेट की विदेश संबंध समिति के बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समुदाय के कर्मचारियों के साथ बैठक की, जिसमें मानवाधिकारों और तिब्बती मुद्दों पर चर्चा चली।

◆ ०७. दिल्ली में तिब्बती संसदीय दल का तिब्बत पक्षधरता अभियान शुरू

१७ दिसंबर, २०२४

नई दिल्ली, १६ दिसंबर २०२४। दिल्ली में तिब्बती संसदीय दल का पक्षधरता प्रयास: भारतीय संसद का शीतकालीन सत्र चल रहा है। इसी दौरान १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्यों ने नई दिल्ली में तिब्बत के पक्ष में पहल शुरू की है। उनका उद्देश्य चीनी कम्युनिस्ट शासन के तहत तिब्बती लोगों के सामने आने वाली गंभीर चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना, १९५९ से परम पावन दलाई लामा और तिब्बती शरणार्थियों की मेजबानी करने के लिए भारत सरकार और यहां के लोगों के प्रति आभार व्यक्त करना और भारतीय सांसदों को तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना है।

निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग सहित २९ सांसदों के एक प्रतिनिधिमंडल ने इन पक्षधरता प्रयासों की शुरुआत की। प्रतिनिधिमंडल को छह समितियों में विभाजित किया गया। इन समितियों ने भारत के एक केंद्रीय मंत्री, १६ राज्यों के आठ अलग-अलग राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व करने वाले राज्यसभा और लोकसभा के २० सदस्यों के साथ-साथ कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ मिलकर बातचीत की।

उपरोक्त छह समितियों में रखे गए सांसदों का विवरण इस प्रकार है। पहली समिति में स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल, सांसद गेशे मोनलम थारचिन, सांसद यूडन औकात्संग, सांसद ताशी धुंडुप और सांसद तेनजिंग जिग्मे शामिल थे।

दूसरी समिति में डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग, सांसद दावा फुनकी, सांसद कुंगा सोटोप, सांसद लोबसांग थुप्टेन और सांसद थुप्टेन ग्यात्सो थे। तीसरे समूह में सांसद दावा शेरिंग, सांसद तेन्पा यारफेल, सांसद रिग्जिन ल्हुंडुप, सांसद वांगडु दोरजी और सांसद पेमा सो शामिल थे।

चौथी समिति में सांसद तेनज़िन जिगदल, सांसद तेन्पा यारफेल, सांसद सानेसांग धोंदुप ताशी, सांसद शेरिंग यांगचेन और सांसद फुरपा दोरजी रखे गए थे। पांचवें समूह में सांसद लोपोन थुप्टेन ग्यालसेन, सांसद लघ्यारी नामग्याल डोलकर, सांसद गेशे अटोंग रिनचेन ग्यालसेन और सांसद चोएडक ग्यासो थे। छठे समूह में सांसद मिग्युर दोरजी, सांसद गेशे ल्हारम्पा गोवो लोबसांग फेंडे, सांसद शेरिंग ल्हामो, सांसद लोबसांग ग्यासो सिथेर और सांसद थोंडुप शेरिंग शामिल किए गए थे।

स्पीकर के नेतृत्व वाली पहली समिति ने ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सदस्य डॉ. रवीन्द्र नारायण बेहरा, ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सदस्य सांसद प्रदीप पुरोहित, ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सदस्य सांसद सुकांत कुमार पाणिग्रही, ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सदस्य सांसद विजय बघेल, पूर्व राज्य मंत्री श्री निसिथ प्रमाणिक, कांग्रेस की लोकसभा सदस्य ज्योत्सना चरणदास महंत और भाजपा के लोकसभा सांसद बृजमोहन अग्रवाल से मुलाकात की।

दूसरी समिति ने ओडिशा से भाजपा के लोकसभा सदस्य और तिब्बत के लिए अखिल भारतीय सर्वदलीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) के संयोजक भर्तृहरि महताब, त्रिपुरा से भाजपा की लोकसभा सदस्य कृति देवी देबबर्मन, राजस्थान से लोकसभा सदस्य राजकुमार राउत, बिहार से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के लोकसभा सदस्य सुदामा प्रसाद, लोकसभा सदस्य (भाजपा) काली चरण सिंह, लोकसभा सदस्य (भाजपा) भोजराज नाग, लोकसभा सदस्य अल्फ्रेड कन्नगम आर्थर, लोकसभा सदस्य (कांग्रेस) सलेंग ए. संगमा, लोकसभा सदस्य (जोराम पीपुल्स मूवमेंट) रिचर्ड वनलालहमंगइहा, लोकसभा (राजद) सांसद सुधाकर सिंह, खादी और ग्रामोद्योग आयोग के पूर्व सदस्य श्री बसंत और लोकसभा सदस्य (समाजवादी पार्टी) जियाउर रहमान बर्क से मुलाकात की।

तीसरी समिति ने हिमाचल प्रदेश (भाजपा) से राज्यसभा सदस्य हर्ष महाजन और हिमाचल प्रदेश (भाजपा) से राज्यसभा सदस्य डॉ. राजीव भारद्वाज के साथ बैठक की।

चौथी समिति ने केरल से लोकसभा सदस्य (क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी) सांसद एन.के. प्रेमचंद्रन के साथ बैठक की।

पांचवीं समिति ने गुजरात से लोकसभा सदस्य और पूर्व केंद्रीय मंत्री (भाजपा) सांसद पुरुषोत्तम रूपाला, गुजरात से लोकसभा सदस्य (भाजपा) मितेश रमेशभाई पटेल और मध्य प्रदेश से राज्यसभा सदस्य (कांग्रेस) दिग्विजय सिंह से मुलाकात की।

छठी समिति ने भारत के संसदीय मामलों के केंद्रीय मंत्री श्री किरेन रिजिजू और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के महासचिव श्री दोराईसामी राजा के साथ बैठकें कीं।

उपरोक्त भारतीय नेताओं को सौंपे गए आठ सूत्री अपील पत्र में तिब्बती सांसदों ने अपील की कि तिब्बत को ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर एक विशिष्ट और संप्रभु अतीत वाले अधिग्रहीत राष्ट्र के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) को तिब्बत-चीन संघर्ष को मध्यम मार्ग नीति के तहत हल करने के लिए दलाई लामा या निर्वाचित तिब्बती नेताओं के प्रतिनिधियों के साथ सार्थक बातचीत करनी चाहिए और चीन के संविधान के तहत वास्तविक स्वायत्तता की मांग करनी चाहिए।

उन्होंने यह भी अपील की कि जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) को तिब्बत के संसाधनों के चीन के दोहन के पर्यावरणीय प्रभाव और वैश्विक जलवायु परिवर्तन में इसके योगदान पर अध्ययन शुरू करना चाहिए। स्वतंत्र मानवाधिकार संगठनों को तिब्बत में मानवाधिकार स्थिति की निगरानी करने की अनुमति दी जानी चाहिए और संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदकों को यात्रा के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए। चीन को ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा सहित सभी तिब्बती राजनीतिक कैदियों को भी रिहा करना चाहिए। पीआरसी को तिब्बती संस्कृति, भाषा और धर्म को खत्म करने के उद्देश्य से चलाई जा रही अपनी नीतियों को वापस ले लेना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, प्रतिनिधिमंडल ने आग्रह किया कि लोकतांत्रिक संस्थाओं और

वैश्विक स्थिरता के लिए खतरा बने चीन के अधिनायकवाद और गलत सूचना अभियानों का मुकाबला करने के लिए एक राष्ट्रीय विधायी ढांचा स्थापित किया जाना चाहिए। भारत के नीति-निर्माताओं को सभी उपलब्ध प्लेटफार्मों पर तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन के बारे में जागरुकता बढ़ानी चाहिए और इस बारे में चिंता व्यक्त करनी चाहिए।

◆ ०८. एपीआईपीएफटी के सह-संयोजक सांसद तापिर गाओ ने भारतीय संसद में परम पावन दलाई लामा पर भाषण दिया

२४ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। अरुणाचल प्रदेश से लोकसभा सदस्य और तिब्बत के लिए अखिल भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) के सह-संयोजक श्री तापिर गाओ ने १६ दिसंबर २०२४ को भारतीय संसद के निचले सदन में शून्यकाल के दौरान परम पावन दलाई लामा पर एक महत्वपूर्ण भाषण दिया।

अपने संबोधन में श्री गाओ ने भारत सरकार से परम पावन दलाई लामा नामक संस्था को आधिकारिक रूप से मान्यता देने और शांति, अहिंसा और धार्मिक सद्भाव के लिए उनके वैश्विक योगदान के सम्मान में परम पावन को भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित करने का आग्रह किया।

श्री गाओ ने परम पावन दलाई लामा के अगले पुनर्जन्म और उत्तराधिकार के लिए भारत द्वारा महत्वपूर्ण तैयारी किए जाने, विशेष रूप से चीन द्वारा अपने १५वें दलाई लामा को एकतरफा नियुक्त करने के प्रयासों के आलोक में, के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

ये टिप्पणियां तिब्बती धार्मिक मामलों में चीन के हस्तक्षेप और तिब्बती समुदाय और भारत दोनों के लिए संभावित परिणामों पर बढ़ती चिंताओं के संदर्भ में हैं। यह संबोधन तिब्बत के पक्ष में अभियान चलाने और तिब्बती मुद्दे के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत करने के भारतीय सांसदों के चल रहे प्रयासों में एक और महत्वपूर्ण बढ़त है।

निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने सभी तिब्बती लोगों की ओर से १७ दिसंबर २०२४ को दिल्ली में तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच की बैठक में तिब्बत के बारे भारतीय संसद में शून्यकाल का उपयोग करते हुए भाषण देने के लिए श्री तापिर गाओ के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

अपने सोशल मीडिया हैंडल पर अपने भाषण की एक क्लिप साझा करते हुए श्री तापिर गाओ ने लिखा, 'आज संसद में शून्यकाल के दौरान मैंने सरकार से दलाई लामा नामक संस्था को मान्यता देने का आग्रह किया, क्योंकि १९५९ में १५वें दलाई लामा को नियुक्त करने का चीनी सरकार का निर्णय न केवल बौद्ध धर्म के लिए बल्कि तिब्बती लोगों और तिब्बत के भविष्य के लिए भी गंभीर खतरा है। भारत और दुनिया को वर्तमान दलाई लामा के सही उत्तराधिकारी को मान्यता देने, तिब्बतियों के धार्मिक और सांस्कृतिक अखंडता की रक्षा करने और इस उद्देश्य के लिए वैश्विक समर्थन सुनिश्चित करने के लिए निर्णायक रूप से कार्य करना चाहिए। मैंने परम पावन १४वें दलाई लामा को शांति, करुणा, मानवता और सार्वभौमिक भाईचारे के प्रति उनके अटूट समर्पण के सम्मान में सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित करने का भी आह्वान किया। यह लंबे समय से लंबित मांग लोगों की सामूहिक भावना को दर्शाती है, क्योंकि परम पावन शांति के सच्चे मसीहा और दुनिया के लिए आशा की किरण बने हुए हैं।'

०९. एपीआईपीएफटी ने तिब्बत पर १२ सूत्रीय प्रस्ताव पारित किया

१९ दिसंबर, २०२४

नई दिल्ली। तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) और निर्वासित तिब्बती संसद (टीपीईई) ने तिब्बत से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर चर्चा के लिए १७ दिसंबर २०२४ को एक बैठक बुलाई।

बैठक में विभिन्न राजनीतिक दलों और संसद के दोनों सदनों के २५ से अधिक सांसद मौजूद थे। इनमें एपीआईपीएफटी के संयोजक सांसद भर्तृहरि महताब, एपीआईपीएफटी के सह-संयोजक सांसद तापिर गाओ, सांसद सुजीत कुमार, सांसद इंद्र हंग सुब्बा (एसकेएम), सांसद कृष्ण प्रसाद टेनेटी (टीडीपी), सांसद अल्फ्रेड कन्नगम आर्थर (आईएनसी), सांसद डॉ. कदियम काव्या (आईएनसी), सांसद सलेंग ए. संगमा (आईएनसी), सांसद महेश कश्यप (भाजपा), सांसद प्रताप चंद्र सारंगी (भाजपा), सांसद एडवोकेट गोवाल पदवी (कांग्रेस), सांसद डॉ. ए. बिमोल अकोईजाम (कांग्रेस), सांसद सुधाकर सिंह (राष्ट्रीय जनता दल), सांसद जून मलियाह (अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस), सांसद हरीश चंद्र मीना (कांग्रेस), सांसद अमर सिंह तिस्सो (भाजपा), सांसद कृति देवी डी. बर्मन (भाजपा), सांसद संगीता कुमारी सिंह देव (भाजपा), सांसद मनोज तिग्गा (भाजपा), सांसद कामकन्या प्रसाद तासा (भाजपा), सांसद अंगोमचा बिमोल अकोईजाम (कांग्रेस), सांसद प्रणीति शिंदे (कांग्रेस), सांसद प्रभा मल्लिकार्जुन (कांग्रेस), सांसद भोज राज नाग (भाजपा), सांसद रुद्र नारायण पाणि (भाजपा) और अन्य शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत सांसद और एपीआईपीएफटी के सह-संयोजक श्री तापिर गाओ के स्वागत भाषण से हुई। इसके बाद निर्वासित तिब्बती संसद की उपाध्यक्ष डोल्मा शेरिंग तेखांग ने तिब्बत के नवीनतम घटनाक्रम पर जानकारी दी। इसके अतिरिक्त अध्यक्ष खेन्पो सोनम तेनफेल, राज्यसभा सदस्य और एपीआईपीएफटी के पूर्व संयोजक श्री सुजीत कुमार और लोकसभा सदस्य और एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री भर्तृहरि महताब ने भी भाषण दिया।

इस कार्यक्रम के दौरान कई अन्य सांसदों ने भी तिब्बत मुद्दे के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। बैठक का समापन तिब्बत के लिए अखिल भारतीय संसदीय मंच द्वारा तिब्बत पर एक प्रस्ताव पारित करने के साथ हुआ।

तिब्बत के लिए अखिल भारतीय सर्वदलीय संसदीय मंच के सह-संयोजक श्री तापिर गाओ ने अपने संबोधन में शून्यकाल के दौरान भारतीय संसद में दिए गए अपने बयान को दोहराया, जिसमें उन्होंने भारत सरकार से परम पावन दलाई लामा नामक संस्था को मान्यता देने और उन्हें 'भारत रत्न' प्रदान करने का आग्रह किया था। उन्होंने परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म और उत्तराधिकार के लिए भारत द्वारा तैयारी के महत्व पर भी जोर दिया, खासकर चीन द्वारा अपने १५वें दलाई लामा को नियुक्त करने के प्रयासों के मद्देनजर, जैसा कि आज भारतीय संसद में कहा गया।

डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने तिब्बत में नवीनतम घटनाक्रमों पर जानकारी दी। इसमें चीनी सरकार द्वारा तिब्बती बच्चों को तिब्बत के औपनिवेशिक प्रणाली के आवासीय स्कूलों में जबरन भेजने पर प्रकाश डाला

गया। इस स्कूल प्रणाली का उद्देश्य तिब्बती बच्चों को अपनी भाषा, संस्कृति और धर्म सीखने के उनके जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित करना है। उन्होंने चीन के मानवाधिकारों के हनन के जवाब में तिब्बतियों द्वारा किए जा रहे आत्मदाह विरोध-प्रदर्शनों के साथ-साथ तिब्बत में चलाए जा रहे हर चीज का चीनीकरण करने के प्रयासों में लागू की गई रणनीतिक नीतियों और अन्य मुद्दों पर भी बात की।

राज्यसभा सदस्य और एपीआईपीटी के पूर्व संयोजक श्री सुजीत कुमार ने अपने संबोधन में बीजद के साथ अपने पिछले जुड़ाव को याद किया, जिसकी स्थापना श्री बीजू पटनायक ने की थी। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि तिब्बत के कट्टर समर्थक श्री पटनायक भारत के अग्रणी मुख्यमंत्रियों में से एक थे, जिन्हें ओडिशा में तिब्बती बस्तियों के लिए भूमि उपलब्ध कराने के लिए जाना जाता है। श्री सुजीत कुमार ने तिब्बत के साथ अपने लंबे समय से चले आ रहे संबंध पर गर्व व्यक्त किया और इस बात पर जोर दिया कि भारत की सीमा कभी भी चीन के साथ नहीं, बल्कि तिब्बत के साथ लगी है, एक तथ्य जो भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के ऐतिहासिक नाम से समर्थित है। उन्होंने तिब्बत के मुद्दे को अपने दृढ़ समर्थन का आश्वासन देते हुए संबोधन का समापन किया।

तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) में एक भावपूर्ण भाषण में स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने तिब्बत और उसके मुद्दे के समर्थन में भारतीय राजनीतिक नेताओं को एकजुट करने में मंच की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने तिब्बत के साथ भारत की निरंतर एकजुटता के लिए गहरा आभार व्यक्त किया, विशेष रूप से श्री भर्तृहरि महताब और श्री तापिर गाओ जैसे नेताओं के प्रयासों को मान्यता दी, जिन्होंने भारतीय संसद में तिब्बत की वकालत की। स्पीकर ने भारत के साथ तिब्बत के महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित किया तथा एक बफर राज्य के रूप में तिब्बत की ऐतिहासिक भूमिका और इसके पर्यावरणीय महत्व पर जोर दिया।

एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री भर्तृहरि महताब ने भारत और तिब्बत के बीच मजबूत दोस्ती पर जोर दिया। तिब्बत की समृद्ध संस्कृति, धर्म और भाषा को रेखांकित किया, जो चीनी कब्जे के कारण विनाश के खतरे में हैं। संयोजक ने इस ऐतिहासिक तथ्य को भी दोहराया कि भारत तिब्बत के साथ सीमा साझा करता है, चीन के साथ नहीं। उन्होंने जोर देकर कहा कि वास्तविक नियंत्रण रेखा सही मायने में भारत-तिब्बत सीमा है।

बैठक के दौरान कई प्रमुख एजेंडों पर चर्चा की गई। मुख्य विषयों में से एक यह था कि तिब्बत से संबंधित मुद्दों पर विभिन्न राजनीतिक दलों तक पहुंच कैसे बढ़ाई जाए, जिसमें भारतीय संसद में तिब्बत की चिंताओं को उठाने के लिए ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंट्री फोरम फॉर तिब्बत (एपीआईपीएफटी) के सदस्यों को प्रोत्साहित करने के प्रयास शामिल हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्म वर्ष (करुणा वर्ष) के लिए कार्यक्रमों की योजना बनाना था। जिसका उद्देश्य निर्वासित तिब्बती संसद (टीपीआइई) के साथ मिलकर करुणा के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना था। कार्यक्रम का समापन भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली की समन्वयक ताशी देकि के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

बैठक में निम्नलिखित १२ बिंदुओं को पारित किया गया।

- विभिन्न राजनीतिक दलों से संपर्क को बढ़ाया जाए।
- ऑल पार्टी इंडियन पार्लियामेंट्री फोरम फॉर तिब्बत (एपीआईपीएफटी) के सदस्यों द्वारा भारतीय संसद में तिब्बत के मुद्दों को उठाया जाना।

- निर्वासित तिब्बती संसद (टीपीआईई) के सहयोग से परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन (करुणा वर्ष) के दौरान कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

- तिब्बत को ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर स्वतंत्र और संप्रभु अतीत वाले एक अधिकृत राष्ट्र के रूप में मान्यता दें।

- चीनी जनवादी गणराज्य से परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधियों या तिब्बती समुदाय के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित नेताओं के साथ बिना किसी पूर्व शर्त के ठोस बातचीत करने का आग्रह करें, जिसका उद्देश्य मध्यम मार्ग नीति के माध्यम से तिब्बत-चीन संघर्ष को हल करना और पीआरसी के संविधान के भीतर वास्तविक स्वायत्तता प्राप्त करना है।

- जलवायु परिवर्तन अनुसंधान: तिब्बत के प्राकृतिक संसाधनों के पीआरसी द्वारा दोहन और वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर इसके प्रतिकूल प्रभावों पर वैज्ञानिक अध्ययन शुरू करने के लिए जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) का आयोजन करने की अपील।

- मानवाधिकार निगरानी: चीन पर दबाव डालें कि वह स्वतंत्र मानवाधिकार संगठनों को तिब्बत में मानवाधिकार स्थिति की निगरानी और रिपोर्ट करने की अनुमति दे। इसके अतिरिक्त, संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदकों, विशेष रूप से राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्ण सभा और संगठन, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं पर ध्यान केंद्रित करने वालों को जल्द से जल्द तिब्बत की यात्रा की सुविधा देने के लिए स्थायी निमंत्रण दें।

- तिब्बती राजनीतिक कैदियों की रिहाई: पीआरसी सरकार से सभी तिब्बती राजनीतिक कैदियों को बिना शर्त रिहा करने का आग्रह करें, जिनमें ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा भी शामिल हैं, जिनके हालचाल के बारे में १७ मई, १९९५ के बाद से कोई जानकारी नहीं है।

- दमनकारी नीतियों को रोकें: पीआरसी से तिब्बती संस्कृति, भाषा और धर्म को खत्म करने के उद्देश्य से अपनी दमनकारी नीतियों को रोकने का आह्वान करें।

- अधिनायकवाद और गलत सूचना के खिलाफ विधायी ढांचा: चीन के अधिनायकवादी और गलत सूचना अभियानों के नेटवर्क का मुकाबला करने के लिए एक राष्ट्रीय विधायी ढांचा स्थापित करें। ये चीनी नेटवर्क लोकतांत्रिक संस्थानों में जनता के विश्वास को खत्म करते हैं, राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ाते हैं और क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता को खतरा पहुंचाते हैं।

- नीति निर्माताओं से आग्रह करें कि वे सभी उपलब्ध मंचों पर तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर अपनी आवाज उठाएं और इसे लेकर अपनी चिंता व्यक्त करें।

- अध्यक्ष की अनुमति से कोई अन्य मामला।

◆ १०. दिल्ली में तिब्बती संसदीय दल का तिब्बत के पक्ष में अभियान सफलतापूर्वक संपन्न

१९ दिसंबर, २०२४

नई दिल्ली। नई दिल्ली में भारतीय संसद के शीतकालीन सत्र के शुरू होने के साथ ही १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्यों ने १६ से १८

दिसंबर तक तिब्बत के पक्ष मे सक्रिय रूप से अभियान चलाया। इन तीन दिनों के दौरान उन्होंने एक केंद्रीय मंत्री, दो राज्य मंत्रियों, विभिन्न राजनीतिक दलों के राज्यसभा और लोकसभा के ७९ सदस्यों के साथ ही एक स्वतंत्र उम्मीदवार और राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत सांसद सहित प्रमुख हस्तियों से संपर्क किया। ये सांसद विभिन्न राज्यों और गणमान्य व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

छह समितियों में विभाजित प्रतिनिधिमंडल के तिब्बती सांसदों ने अपनी पक्षधरता के तीसरे दिन १८ दिसंबर को संसद के दोनों सदनों के ३१ सांसदों, सात विभिन्न राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व करने वाले, एक निर्दलीय सांसद और एक राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत सांसद से मुलाकात करके अपनी पक्षधरता प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया। उनके प्रयासों में चीनी कम्युनिस्ट शासन के तहत तिब्बतियों के सामने आने वाली गंभीर चुनौतियों के बारे में जागरुकता बढ़ाना, १९५९ से परम पावन दलाई लामा और तिब्बती शरणार्थियों की मेजबानी करने में भारत सरकार के समर्थन के लिए आभार व्यक्त करना और भारतीय सांसदों को तिब्बत के लिए अखिल भारतीय सर्वदलीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल था।

छह समितियों में विभाजित सांसदों ने अपने वकालत के तीसरे दिन १८ दिसंबर को विभिन्न राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व करने वाले दोनों सदनों के सांसदों से मुलाकात की। उनका उद्देश्य चीनी कम्युनिस्ट शासन के तहत तिब्बती लोगों के सामने आने वाली गंभीर चुनौतियों के बारे में जागरुकता बढ़ाना, १९५९ से परम पावन दलाई लामा और तिब्बती शरणार्थियों की मेजबानी करने में उनके आतिथ्य के लिए भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति आभार व्यक्त करना और भारतीय सांसदों को तिब्बत के लिए अखिल भारतीय सर्वदलीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना है।

स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल, सांसद गेशे मोनलम थारचिन, सांसद यूडॉन औकात्सांग, सांसद ताशी धुंडुप और सांसद तेनजिंग जिग्मे से मिलकर गठित पहली समिति ने भाजपा के लोकसभा सदस्य सौमित्र खान, लोकसभा सदस्य (भाजपा) जगन्नाथ सरकार, लोकसभा सदस्य (भाजपा) अभिजीत गंगोपाध्याय, लोकसभा सदस्य (भाजपा) विनोद कुमार बिंद, लोकसभा सदस्य (आईएनडी) पटेल बाबूभाई और राज्यसभा सदस्य (बीआरएस) के.आर. सुरेश रेड्डी से मुलाकात की।

डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग, सांसद दावा फुन्की, सांसद कुंगा सोटोप, सांसद लोबसांग थुप्तेन और सांसद थुप्तेन ग्यात्सो को लेकर गठित दूसरी समिति ने लोकसभा सदस्य (भाजपा) विशु दत्त शर्मा, लोकसभा सदस्य (भाजपा) छत्रपाल सिंह, लोकसभा सदस्य (भाजपा) वी.डी. शर्मा, लोकसभा सदस्य (कांग्रेस) पूर्व आईएएस अधिकारी एम.पी. कुमार नाइक, लोकसभा सदस्य (जेडीयू) देवेश चंद्र ठाकुर और राज्यसभा सदस्य (कांग्रेस) विवेक के. तन्खा से मुलाकात की।

तिब्बती सांसद दावा शेरिंग, सांसद तेन्पा यारफेल, सांसद रिगज़िन ल्हुंडुप, सांसद वांगदुए दोरजी और सांसद पेमा सो को लेकर गठित तीसरे समूह ने माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी, लोकसभा सदस्य (समाजवादी पार्टी) छोटेलाल सिंह खरवार, लोकसभा सदस्य (समाजवादी पार्टी) सुनीता वर्मा, लोकसभा सदस्य (भाजपा) जनार्दन मिश्रा, लोकसभा सदस्य (कांग्रेस) अदूर प्रकाश, लोकसभा सांसद राजकुमार सांगवान और लोकसभा सदस्य (कांग्रेस) अमर सिंह से मुलाकात की।

सांसद तेनज़िन जिगदल, सांसद तेन्पा यारफेल, सांसद सानेसांग धोंदुप ताशी, सांसद शेरिंग यांगचेन और सांसद फुरपा दोरजी की चौथी समिति ने राज्यसभा सदस्य (भाजपा) सांसद लेहर सिंह सिरोया से मुलाकात की।

पांचवें समूह में सांसद लोपोन थुप्टेन ग्यालत्सेन, सांसद लग्यारी नामग्याल डोलकर, सांसद गेशे अटोंग रिनचेन ग्यालत्सेन और सांसद चोएदक ग्यात्सो शामिल थे। इस समूह ने लोकसभा सदस्य (भाजपा) गजेंद्र सिंह पटेल, लोकसभा सदस्य (भाजपा) गणेश सिंह, लोकसभा सदस्य (भाजपा) रोडमल नागर, लोकसभा सदस्य (भाजपा) प्रवीण खंडेलवाल, राज्यसभा सदस्य (कांग्रेस) विवेक तन्खा और लोकसभा सदस्य (कांग्रेस) कुलदीप इंदौरा से मुलाकात की।

छठे समूह में सांसद मिग्युर दोरजी, सांसद गेशे ल्हारम्पा गोवो लोबसांग फेंडे, सांसद शेरिंग ल्हामो, सांसद लोबसांग ग्यात्सो सिथेर और सांसद थोंडुप शेरिंग शामिल थे। इस समूह ने राज्यसभा सदस्य (भाजपा) राम चंदर जांगड़ा, लोकसभा सदस्य (भाजपा) धर्मवीर सिंह और राष्ट्रपति मनोनीत, राज्यसभा सदस्य (भाजपा) गुलाम अली से मुलाकात की।

उपरोक्त भारतीय नेताओं को सौंपे गए आठ सूत्री अपील पत्र में तिब्बती सांसदों ने अपील की कि तिब्बत को ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर एक विशिष्ट और संप्रभु अतीत वाले अधिग्रहीत राष्ट्र के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) को तिब्बत-चीन संघर्ष को मध्यम मार्ग नीति के तहत हल करने के लिए दलाई लामा या निर्वाचित तिब्बती नेताओं के प्रतिनिधियों के साथ सार्थक बातचीत करनी चाहिए और चीन के संविधान के तहत वास्तविक स्वायत्तता की मांग करनी चाहिए।

उन्होंने यह भी अपील की कि जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) को तिब्बत के संसाधनों के चीन के दोहन के पर्यावरणीय प्रभाव और वैश्विक जलवायु परिवर्तन में इसके योगदान पर अध्ययन शुरू करना चाहिए। स्वतंत्र मानवाधिकार संगठनों को तिब्बत में मानवाधिकार स्थिति की निगरानी करने की अनुमति दी जानी चाहिए और संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदकों को यात्रा के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए। चीन को ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा सहित सभी तिब्बती राजनीतिक कैदियों को भी रिहा करना चाहिए। पीआरसी को तिब्बती संस्कृति, भाषा और धर्म को खत्म करने के उद्देश्य से चलाई जा रही अपनी नीतियों को वापस ले लेना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, प्रतिनिधिमंडल ने आग्रह किया कि लोकतांत्रिक संस्थाओं और वैश्विक स्थिरता के लिए खतरा बने चीन के अधिनायकवाद और गलत सूचना अभियानों का मुकाबला करने के लिए एक राष्ट्रीय विधायी ढांचा स्थापित किया जाना चाहिए। भारत के नीति-निर्माताओं को सभी उपलब्ध प्लेटफार्मों पर तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन के बारे में जागरुकता बढ़ानी चाहिए और इस बारे में चिंता व्यक्त करनी चाहिए।

इस पक्षधरता अभियान के प्रयास को आगे बढ़ाया जा रहा है। भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) की समन्वयक और कर्मचारियों के साथ-साथ तिब्बती संसदीय स्टाफ सदस्यों द्वारा बैठकों के दौरान समितियों के साथ समन्वय किया गया।

◆ ११. स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के निधन पर शोक व्यक्त किया

३१ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया और हार्दिक संवेदना व्यक्त की।

दिवंगत राष्ट्रपति के बेटे चिप कार्टर और अन्य शोक संतप्त परिवार के सदस्यों को भेजे एक संदेश में स्पीकर ने लिखा, 'मुझे आपके प्रिय पिता, संयुक्त राज्य अमेरिका के माननीय पूर्व राष्ट्रपति श्री जिमी कार्टर के निधन के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ है। वे परम पावन १४वें दलाई लामा के करीबी मित्र थे और उन्होंने तिब्बती लोगों की दुर्दशा पर गहरी चिंता व्यक्त की थी। दुनिया भर में निहायत ज़रूरतमंद लोगों के लिए शांति, मानवाधिकार और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में उनके अटूट प्रयासों की परिणति नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त करने के रूप में हुई।'

स्पीकर ने आगे कहा, 'उनके निधन से अमेरिका और पूरी दुनिया ने एक ऐसे नेता को खो दिया है, जिनकी मानवाधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता ने अनगिनत लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। मानवता की सेवा के लिए उनकी करुणा की भावना और समर्पण को बहुत सम्मान और प्रशंसा के साथ याद किया जाएगा। शांति, लोकतंत्र और मानवीय गरिमा के चैंपियन के रूप में उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।'

स्पीकर ने अंत में लिखा, १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से मैं आपके परिवार, दोस्तों और आपके पिता के सभी शुभचिंतकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। मैं दिवंगत नेता के लिए अपनी सच्ची प्रार्थना और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। दुख की इस घड़ी में तिब्बती लोग आपके साथ हैं और उनकी आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

◆ १२. शिक्षा विभाग ने स्कूल प्रीफेक्ट्स और कैप्टन के लिए नेतृत्व कार्यशाला शुरू की

२३ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। भारत में तिब्बती स्कूलों में शीतकालीन अवकाश के लिए अपने शैक्षणिक सत्र का समापन किया। इसके ठीक बाद सीटीए के शिक्षा विभाग ने आज २३ दिसंबर की सुबह धर्मशाला में सीटीए के प्रशासनिक प्रशिक्षण केंद्र में स्कूल प्रीफेक्ट्स और कैप्टन के लिए नेतृत्व कार्यशाला शुरू की। इसका उद्घाटन एक संक्षिप्त समारोह के साथ किया गया।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री थारलाम डोल्मा चांगरा थे। उन्होंने तिब्बती छात्रों को शिक्षित करने और तिब्बती स्कूलों के प्रशासन के अनुभवों के बारे में गहन जानकारी दी।

कार्यशाला में नेपाल स्थित दो तिब्बती स्कूलों सहित १६ विभिन्न तिब्बती स्कूलों के कुल ४३ छात्र प्रतिनिधिगण भाग ले रहे हैं। इसके अलावा इन स्कूलों के १६ शिक्षक इस छह दिवसीय कार्यशाला में छात्रों के साथ परामर्शदाता और अभिभावक के रूप में मौजूद रहेंगे।

कार्यक्रम की शुरुआत शिक्षा विभाग के शैक्षणिक अनुभाग में अतिरिक्त सचिव तेनजिन दोरजी के परिचयात्मक भाषण से हुई। उन्होंने नेतृत्व कार्यशाला की एक रूपरेखा प्रस्तुत की। इसमें इस बात पर बल दिया गया कि इसका उद्देश्य प्रतिभागियों के नेतृत्व कौशल को बढ़ाना है। साथ ही निर्वासित तिब्बतियों के लिए बुनियादी शिक्षा नीति के उद्देश्यों के अनुरूप अन्य आवश्यक योग्यताएं प्रदान करना है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कार्यशाला का उद्देश्य छात्र नेताओं में करुणा और सार्वभौमिक जिम्मेदारी जैसे मानवीय गुणों को विकसित करना भी है। साथ ही तिब्बती सांस्कृतिक और भाषाई विरासत को संरक्षित करने के महत्व को रेखांकित करना है, जिसे तिब्बत के अंदर सरकारी स्कूलों में व्यवस्थित रूप से कमज़ोर किया जाता है।

अपने मुख्य भाषण में कलोन थरलाम डोल्मा चांगरा ने एक मजबूत तिब्बती निर्वासित समुदाय की स्थापना में परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व में पुरानी पीढ़ियों द्वारा किए गए अपार बलिदानों और योगदानों को याद किया। उन्होंने कहा, 'हमारे तिब्बती स्कूलों द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रचुर अवसरों और संसाधनों के लिए हमेशा आभारी रहें, जो अक्सर प्रतिष्ठित स्थानीय और निजी स्कूलों में भी उपलब्ध नहीं होते हैं। आपको इन अवसरों के साथ आने वाली तिब्बती जिम्मेदारियों को निभाना चाहिए।' कलोन ने प्रतिभागियों को इस कार्यशाला में जो कुछ भी सीखा है उसे अपने साथी छात्रों के बीच बांटने के लिए प्रोत्साहित किया।

कलोन थरलम डोलमा चांगरा ने अपने पूर्व स्कूल प्रिंसिपल के रूप में अपने अनुभवों के आधार पर विशेष रूप से स्कूल प्रीफेक्ट्स और कैप्टन की जिम्मेदारियों के बारे में बात की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रीफेक्ट्स और कैप्टन को शिक्षकों और छात्रों के बीच एक पुल के रूप में कार्य करना चाहिए, जिससे छात्रों के बीच अपर्याप्तता और उपचार में असमानता जैसे मुद्दों को हल करने में मदद मिल सके। उन्होंने स्कूल के माहौल में शरारतपन को भी अस्वीकार कर दिया और सभी को स्कूल के अनुशासन का पालन करने और आत्म-अनुशासन बनाए रखने की सलाह दी। इसके अतिरिक्त, कलोन ने शैक्षणिक सफलता के लिए अच्छे स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया।

इन बिंदुओं के अलावा शिक्षा कलोन ने तिब्बती स्कूलों में विशेष जरूरतों वाले बच्चों की बढ़ती संख्या पर चिंता व्यक्त की और स्कूल प्रशासन और छात्रों से उन्हें सहायता देने के लिए विशेष सेवाएं देने का आग्रह किया।

समारोह का समापन विभाग के शैक्षणिक अनुभाग से अवर सचिव दोरजी वांगड्यू के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

इस नेतृत्व कार्यशाला के दौरान सलाहकार और सुविधाकर्ता विभिन्न विषयों पर चर्चा करेंगे। इसमें तिब्बती भाषा और संस्कृति का महत्व, निर्वासन में तिब्बती लोकतंत्र का विकास, एसईई लर्निंग, नेतृत्व और शिक्षा, संघर्ष समाधान, नेताओं के लिए संचार कौशल, शिक्षा विभाग का छात्रवृत्ति कार्यक्रम, साइबर सुरक्षा और संरक्षा, स्कूलों में लैंगिक समानता और कैरियर मैपिंग शामिल हैं। कार्यक्रम में दलाई लामा लाइब्रेरी और अभिलेखागार और विभिन्न सीटीए विभागों के शैक्षिक दौरे भी शामिल होंगे।

◆ १३. ५१वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में पांच विज्ञान प्रदर्शनियां राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचीं

३१ दिसंबर, २०२४

हरियाणा। राष्ट्रीय स्तर की ५१वीं विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी (राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी) २६ से ३१ दिसंबर २०२४ तक सोनीपत के राई में हरियाणा खेल विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में २९ राज्यों के १८५ से अधिक प्रदर्शकों के साथ-साथ सीटीए स्कूल, केंद्रीय विद्यालय, नवोदय स्कूल और परमाणु ऊर्जा स्कूल जैसे स्वायत्त निकायों ने भी भाग लिया। हरियाणा के विभिन्न स्कूलों से १०,००० से अधिक छात्र-छात्राओं ने प्रदर्शनी में भाग लिया।

प्रदर्शनी का आधिकारिक उद्घाटन हरियाणा के माननीय राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय, हरियाणा के माननीय स्कूल एवं उच्च शिक्षा मंत्री श्री महिपाल ढांडा और एनसीईआरटी के निदेशक प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी ने किया। इस कार्यक्रम में कई तरह की गतिविधियां शामिल थीं। जैसे कि प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों और प्रोफेसरों के व्याख्यान, साथ ही अंतिम दिन एक शैक्षिक भ्रमण। दूसरे दिन पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के कारण प्रदर्शनी में शोक की अवधि रखी गई और सांस्कृतिक प्रदर्शन रद्द कर दिए गए। समापन समारोह में मुख्य शिक्षा आयुक्त पंकज अग्रवाल, हरियाणा के माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री जितेंद्र कुमार और एनसीईआरटी की डीईएसएम प्रमुख प्रो. सुनीता फरक्या ने भाग लिया।

कार्यक्रम में प्रदर्शनियों की थीम 'समाज के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' रखी गईं थीं। इसमें पांच उप-विषय शामिल थे- स्वास्थ्य (स्वास्थ्य सेवा में नवाचारों पर ध्यान केंद्रित करना), जीवन (पर्यावरण के लिए जीवनशैली, टिकाऊ जीवन को बढ़ावा देना), कृषि (खेती और खाद्य सुरक्षा में प्रगति पर जोर देना), संचार और परिवहन (भविष्य की गतिशीलता अवधारणाओं को प्रदर्शित करना) और कम्प्यूटेशनल सोच (प्रौद्योगिकी संचालित समस्या-समाधान पर प्रकाश डालना)। प्रदर्शनों की विस्तृत शृंखला ने कार्यक्रम में रचनात्मकता और ऊर्जा को जोड़ा और इसे नवाचार और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक जीवंत मंच में बदल दिया।

राष्ट्रीय प्रदर्शनी से पहले एनसीईआरटी द्वारा प्रदान की गई थीम के आधार पर तिब्बती स्कूलों में प्रारंभिक स्कूल-स्तरीय प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। इस मंच से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों को जुलाई २०२४ में सातवीं सीटीए स्तरीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी के लिए चुना गया। इसमें टीसीवी सेलाकुई के छह छात्र शामिल थे, जिन्होंने तीन प्रदर्शनियों का प्रतिनिधित्व किया और एसटीएस गुरुपुरा के तीन छात्र, जिन्होंने दो प्रदर्शनियों का प्रतिनिधित्व किया। इन्होंने राष्ट्रीय मंच पर तिब्बती स्कूलों की प्रतिभाओं का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी ने मार्गदर्शक-शिक्षकों द्वारा प्रदान किए गए समर्थन के साथ सफलतापूर्वक सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया और छात्रों के बीच रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम ने तिब्बती छात्रों के साथ-साथ भारत के विभिन्न क्षेत्रों के छात्रों को अपनी वैज्ञानिक क्षमताओं का प्रदर्शन करने, सार्थक शैक्षिक आदान-प्रदान में शामिल होने और बेहतर भविष्य बनाने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की क्षमता को प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान किया।

◆ १४. क्याब्जे कुंदेलिंग रिनपोछे ने वेटिकन में विश्व अंतरधार्मिक सम्मेलन में तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रतिनिधित्व किया

०५ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। पोप फ्रांसिस की गरिमामयी उपस्थिति में इटली स्थित अंतरधार्मिक वार्ता के लिए पोंटिफिकल काउंसिल के सहयोग से श्री नारायण गुरुकुलम ट्रस्ट द्वारा आयोजित विश्व अंतरधार्मिक सम्मेलन २९ और ३० नवंबर २०२४ को वेटिकन में आयोजित किया गया।

तिब्बती बौद्धों के प्रतिनिधि के रूप में क्याब्जे कुंदेलिंग तसक रिनपोछे ने दुनिया के प्रमुख धार्मिक समूहों, सार्वजनिक हस्तियों और विद्वानों के अलावा श्रद्धेय आध्यात्मिक नेताओं और पुजारियों के साथ सम्मेलन में भाग लिया।

बैठक के दौरान कैथोलिक चर्च के प्रमुख और वेटिकन सिटी स्टेट के संप्रभु पोप फ्रांसिस ने इस आयोजन के लिए आयोजकों की सराहना की और कहा, 'धर्मों की महान शिक्षाओं के प्रति सम्मान की कमी दुनिया की आज की अशांत स्थिति का एक कारण है।' पोप ने आगे जोर दिया कि विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच सामंजस्यपूर्ण सहयोग के माध्यम से दुनिया में सकारात्मक योगदान देने के लिए अच्छे नैतिक उपदेशों का अभ्यास किया जाना चाहिए।

अपने संबोधन में क्याब्जे कुंदेलिंग तसक रिनपोछे ने परम पावन १४वें दलाई लामा की महान प्रतिबद्धताओं का परिचय दिया और विश्व अंतरधार्मिक सम्मेलन के दौरान धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया। रिनपोछे ने आगे कहा कि वर्तमान में दुनिया को प्रभावित करने वाले कई दुखों को दूर करने के लिए विभिन्न धर्मों की आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग करना, गहन और सार्थक अंतरधार्मिक सहयोग के माध्यम से विश्व शांति की दिशा में मिलकर काम करना, युवाओं की नई पीढ़ी को नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करना और उन्हें सकारात्मक योगदान देने और सभी के लिए अधिक दयालु और सामंजस्यपूर्ण भविष्य बनाने के लिए सशक्त बनाना अति आवश्यक है।

इसके अलावा पोप के साथ बैठकों के दौरान कुंदेलिंग रिनपोछे ने परम पावन दलाई लामा द्वारा लिखित एक पुस्तक उन्हें स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट किया। आयोजन समिति ने कुंदेलिंग रिनपोछे को इंग्लैंड में २०२५ में होने वाले धार्मिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए निमंत्रण भी दिया।

◆ १५. वरिष्ठ पत्रकारों ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

११ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। नई दिल्ली स्थित भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने अपने वार्षिक मीडिया आउटरीच कार्यक्रम के तहत प्रमुख मीडिया संस्थानों के पांच वरिष्ठ पत्रकारों के एक प्रतिनिधिमंडल के लिए हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला का दौरा आयोजित किया। ०७ से १० दिसंबर २०२४ तक दौरा करने वाले प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बती मुद्दे, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के संचालन और निर्वासित तिब्बतियों के जीवन के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी हासिल की। प्रतिनिधिमंडल के प्रतिष्ठित सदस्यों में नवभारत टाइम्स के राजनीतिक संपादक नरेंद्र नाथ मिश्रा, टाइम्स ऑफ इंडिया में गवर्नेंस के संपादक प्रदीप ठाकुर, द प्रिंट के प्रमुख संवाददाता केशव पद्मनाभन, सेंट्रल

न्यूज एजेंसी, ताइवान के संवाददाता चिन वेई ली और इंडियन एक्सप्रेस के संवाददाता समन हुसैन शामिल थे।

अपनी यात्रा के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती समुदाय के बीच चल रहे संघर्षों और लचीलेपन के बारे में अपनी समझ को गहरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए शैक्षिक दौरों, बैठकों और बातचीत सत्रों की एक शृंखला में भाग लिया।

प्रतिनिधिमंडल का पहला दिन तिब्बती इंस्टीट्यूट ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (टीआईपीए) के दौरे से शुरू हुआ, जहां उन्होंने तिब्बती कलाओं की खोज की और वरिष्ठ कलाकारों के साथ बातचीत की। बाद में उन्होंने ऊपरी तिब्बती बच्चों के गांव (टीसीवी) का दौरा किया, जहां उन्हें स्कूल के संचालन देखने को मिला और छात्रावास के अभिभावकों और मेट्रन के साथ बातचीत करने का मौका मिला। इससे छात्रावासों में रहने वाले तिब्बती बच्चों के जीवन के बारे में जानकारी मिली। प्रतिनिधिमंडल को टीसीवी के महासचिव केलसांग फुंटसोक ने आवश्यक सहायता प्रदान की।

दूसरे दिन प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत के अंदर और निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों के सामने आने वाले राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए विभिन्न तिब्बती गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के नेताओं और स्थानीय समुदाय के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। मीडिया प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत संग्रहालय का दौरा किया, जहां उन्होंने तिब्बत के इतिहास और स्वतंत्रता के लिए चल रहे संघर्ष से संबंधित प्रदर्शनियों का अवलोकन किया। इसके अतिरिक्त, प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बती कला और संस्कृति के एक महत्वपूर्ण केंद्र नोरबुलिंगका संस्थान का दौरा किया, जिससे तिब्बती विरासत के बारे में उनकी समझ और समृद्ध हुई।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा में सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग की कलोन (मंत्री) नोरज़िन डोल्मा के साथ एक बैठक शामिल थी, जहां उन्होंने तिब्बत में राजनीतिक स्थिति, सीटीए की पहल और तिब्बती मुद्दे के बारे में जागरुकता बढ़ाने में मीडिया की भूमिका के बारे में जानकारी प्रदान की। प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत टीवी का भी दौरा किया, जहां उन्होंने तिब्बत के राजनीतिक अधिकारों की वकालत करने में मीडिया की भूमिका के बारे में जानकारी हासिल की।

प्रतिनिधिमंडल ने सीटीए की कार्यवाहक सिक्योंग डोल्मा ग्यारी से भी मुलाकात की, जिन्होंने तिब्बती आंदोलन के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य पर बहुमूल्य दृष्टिकोण प्रदान किए। सीटीए स्टाफ मेस में दोपहर के भोजन के बाद प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया। यहां उन्होंने स्पीकर भिक्षु खेन्पो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग के साथ चर्चा की। उन्होंने सांस्कृतिक दमन और मानवाधिकार उल्लंघन सहित तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में पत्रकारों को जानकारी दी।

तिब्बती वर्क्स एंड आर्काइव्स पुस्तकालय के निदेशक गेशे लखदोर से मुलाकात की और संरक्षित पांडुलिपियों और बौद्ध धर्मग्रंथों का अवलोकन किया। उन्होंने मेंत्सीखांग (तिब्बती चिकित्सा और खगोल संस्थान) का भी दौरा किया, जहां उन्होंने इसके संग्रहालय के माध्यम से तिब्बती चिकित्सा पद्धतियों और हर्बल परंपराओं के बारे में जानकारी ली और अमचे (तिब्बती डॉक्टरों) के साथ बातचीत की। दिन का समापन तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान में सीटीए के काशाग (मंत्रिमंडल) द्वारा आयोजित रात्रिभोज के निमंत्रण के साथ हुआ। यहां पत्रकारों ने टीआईपीए के सांस्कृतिक प्रदर्शन का अवलोकन किया।

इस यात्रा का समापन सुगलाखांग में एक आधिकारिक कार्यक्रम में प्रतिनिधिमंडल की भागीदारी के साथ हुआ, जो परम पावन १४वें दलाई लामा को दिए गए नोबेल शांति पुरस्कार की ३५वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम के बाद एक प्रेस वार्ता हुई, जिसके दौरान प्रतिनिधिमंडल ने स्थानीय तिब्बती मीडिया प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की। पूरे दौरे के दौरान, प्रतिनिधिमंडल के साथ भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली की समन्वयक ताशी देकि उनके साथ थीं।

इस यात्रा ने प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को तिब्बती समुदाय और उसके निर्वासित प्रशासन को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया। प्रतिनिधिमंडल तिब्बती आंदोलन की गहरी समझ और तिब्बती अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए समर्थन करने की नई प्रतिबद्धता के साथ धर्मशाला से रवाना हुआ। आईटीसीओ तिब्बती मुद्दे के बारे में जागरूकता बढ़ाने और तिब्बत की राजनीतिक और सांस्कृतिक आकांक्षाओं के लिए मीडिया समर्थन को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रतिनिधिमंडल तिब्बती आंदोलन की गहरी समझ और तिब्बती अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए समर्थन की नई प्रतिबद्धता के साथ धर्मशाला से रवाना हुआ।

आईटीसीओ तिब्बती मुद्दे के बारे में जागरुकता बढ़ाने और तिब्बत की राजनीतिक और सांस्कृतिक आकांक्षाओं के लिए मीडिया समर्थन को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

◆ १६. तिब्बत संग्रहालय की 'लॉन्ग लुक होमवार्ड' ने ७००० आगंतुकों को आकर्षित किया, तिब्बती स्वतंत्रता संग्राम पर प्रकाश डाला

२५ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। तिब्बत संग्रहालय की यात्रा प्रदर्शनी 'लॉन्ग लुक होमवार्ड' ने बेंगलुरु में विभिन्न स्थानों पर अत्यधिक सफलता के साथ प्रदर्शन किया। इस दौरान हजारों दर्शक इस प्रदर्शनी को देखने के लिए एकत्र हुए और तिब्बत के इतिहास, संस्कृति और भारत के साथ इसके स्थायी संबंध के बारे में सार्थक बातचीत में शामिल हुए। इंटरैक्टिव डिस्प्ले, शैक्षिक वार्ता और सांस्कृतिक प्रदर्शनों की शृंखला के माध्यम से प्रदर्शनी ने भारत-तिब्बत संबंधों, परम पावन १४वें दलाई लामा के जीवन और विरासत और स्वतंत्रता के लिए तिब्बती संघर्ष जैसे प्रमुख विषयों पर जानकारियां उपलब्ध कराई।

स्थानीय शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से शुरू की गई प्रदर्शनी प्रमुख चार स्थानों से गुजरी। इनमें छात्रों, संकाय सदस्यों, तिब्बती समुदाय के सदस्यों और सभी क्षेत्रों के आगंतुकों सहित लगभग ७,००० व्यक्ति शामिल हुए। प्रत्येक कार्यक्रम को तिब्बत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक दुनिया में इसकी चल रही यात्रा की समझ को गहरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

सचल प्रदर्शनी की शुरुआत दलाई लामा उच्च शिक्षा संस्थान (डीएलआईएचई) के तिब्बत सप्ताह के दौरान शैक्षणिक केंद्र में एक शुभारंभ कार्यक्रम के साथ हुई, जहां प्रदर्शनी ने छात्रों, कर्मचारियों और तिब्बती विद्वानों के एक उत्सुक समूह को आकर्षित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण भारत-तिब्बत संबंधों, परम पावन १४वें दलाई लामा की जीवनी और स्वतंत्रता और न्याय के लिए तिब्बती खोज पर विचारोत्तेजक पैनलों और वृत्तचित्रों की शृंखला थी।

प्रदर्शनी ने इतिहास विभाग और उससे आगे के छात्रों को एक शैक्षणिक सेटिंग में तिब्बत के अनूठे इतिहास से जुड़ने का अवसर प्रदान किया, साथ ही बड़ी संख्या में भाग लेने वाले तिब्बती शोध विद्वानों के बीच बातचीत को भी बढ़ावा दिया। कार्यक्रम की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इसमें १५० छात्रों, ३० कर्मचारियों और २५ तिब्बती शोध विद्वानों की उत्साही भागीदारी रही। इन लोगों ने प्रदर्शनी की सामग्री से गहराई से अपने को जोड़ा।

प्रदर्शनी का अगला पड़ाव बैंगलोर विश्वविद्यालय था, जहां इसने तिब्बत संग्रहालय और विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के बीच सांस्कृतिक सहयोग के साथ अपने को जोड़ा। इस कार्यक्रम का उद्घाटन गणमान्य व्यक्तियों डॉ. जयकारा एस.एम. और मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी जिग्मे सुल्त्रिम ने किया। इस कार्यक्रम में पारंपरिक तिब्बती सांस्कृतिक प्रदर्शनों के साथ-साथ विचारोत्तेजक वार्ताओं का एक समृद्ध मिश्रण प्रदर्शित किया गया। इस कार्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण तिब्बत संग्रहालय के निदेशक तेनज़िन तोपधेन के नेतृत्व में संवादात्मक सत्र था, जिसमें उन्होंने तिब्बत की मुद्राशास्त्रीय विरासत और यह कैसे तिब्बती स्वतंत्रता को दर्शाता है, इस पर गहन चर्चा की। इस कार्यक्रम ने न केवल छात्रों को आकर्षित किया, बल्कि स्थानीय तिब्बती समुदाय का भी ध्यान आकर्षित किया। यही कारण रहा कि ५०० छात्र, ५० कर्मचारी सदस्य और ५० समुदाय के सदस्य इस प्रदर्शनी में शामिल हुए, जिससे एक विविध और संलग्न दर्शक वर्ग सुनिश्चित हुआ।

विश्वविद्यालय में प्रदर्शनी के समापन के बाद डीएलआईएचई ने तिब्बत सप्ताह के समापन को यादगार बनाते हुए एक समापन समारोह आयोजित किया। इस कार्यक्रम में भारत-तिब्बत मैत्री संघ(आईटीएफएस) की भागीदारी देखी गई, जिसमें आईटीएफएस के अध्यक्ष गोपी ने समारोह का संचालन किया। भारत में तिब्बती मुद्दे का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख राजनयिक संगठनों में से एक के रूप में, आईटीएफएस की भागीदारी ने प्रदर्शनी को अतिरिक्त महत्व दिया, जिससे आगंतुकों को तिब्बती संघर्ष के राजनीतिक पहलुओं से जुड़ने का मौका मिला। आईटीएफएस सदस्यों, मेन-सी-खांग प्रतिनिधियों और तिब्बती प्रवासी सदस्यों सहित लगभग १५० आगंतुकों ने कार्यक्रम में भाग लिया, जिससे एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और राजनीतिक संवाद मंच के रूप में प्रदर्शनी की भूमिका और मजबूत हुई।

एक और महत्वपूर्ण प्रदर्शनी बैंगलोर तिब्बती युवा छात्रावास में नोबेल शांति पुरस्कार दिवस के वैश्विक उत्सव की उपलक्ष में आयोजित की गई। यहां प्रदर्शनी ने तिब्बती परंपराओं और मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक अंतरंग और सांस्कृतिक रूप से व्यापक अनुभव प्रदान किया। इसने युवा छात्रावास के छात्रों, आईटीएफएस के सदस्यों और निर्वासित तिब्बतियों सहित लगभग ४५० आगंतुकों को आकर्षित किया। इस कार्यक्रम ने तिब्बती युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर विचार करने के लिए एक स्थान प्रदान किया, जिससे युवा पीढ़ियों के बीच गर्व और एकता की भावना को बढ़ावा मिला।

प्रदर्शनी का अंतिम चरण दयानंद सागर विश्वविद्यालय (डीएसयू) में आयोजित किया गया, जहां इंटरैक्टिव डिस्प्ले और एनिमेशन ने और भी बड़ी संख्या में दर्शकों को आकर्षित किया। डीएसयू में दो दिवसीय प्रदर्शनी को देखने के लिए ५००० से अधिक छात्र और संकाय सदस्य आए, जिन्होंने तिब्बत के राजनीतिक इतिहास, दलाई लामाओं के पुनर्जन्म की पहचान करने की प्रक्रिया और भारत और तिब्बत के बीच लंबे समय से चले आ रहे संबंधों के बारे में जानकारी हासिल की। आकर्षक मल्टीमीडिया के माध्यम से छात्रों को तिब्बती पहचान की आध्यात्मिक और राजनीतिक जटिलताओं के बारे में जानने का अवसर मिला, जिससे इस समृद्ध और जटिल संस्कृति के बारे में उनके ज्ञान में और वृद्धि हुई।

बेंगलुरु में प्रदर्शनी के समाप्त होने के साथ ही इसका प्रचार-प्रसार शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक केंद्रों और तिब्बती समुदाय में व्यापक तौर पर हो गया। इस प्रदर्शनी ने भाग लेने वाले सभी लोगों पर अपना स्थायी प्रभाव छोड़ा। यह आयोजन तिब्बत की विरासत की स्थायी प्रासंगिकता और समकालीन वैश्विक संवादों में इसके निरंतर महत्व का एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है।

'लॉन्ग लुक होमवार्ड' के माध्यम से तिब्बत संग्रहालय ने न केवल तिब्बत के अतीत को जीवंत किया है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि भविष्य में यह वैश्विक बातचीत में संस्कृति, पहचान और राजनीति का सक्रिय हिस्सा बना रहे।

◆ १७. तिब्बती टोक्यो में मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा दिवस के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय समुदाय में शामिल हुए

०९ दिसंबर, २०२४

टोक्यो। जापान में रहनेवाले तिब्बती लोग मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा दिवस मनाने के लिए ०८ दिसंबर को टोक्यो के असाकुसा हनकावाडो पार्क में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ शामिल हुए। पीस मार्च फॉर ह्यूमन राइट्स कमेटी द्वारा 'स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए तानाशाही से लड़ें (फाइट द डिक्टेटरशिप फॉर फ्रीडम एंड ह्यूमन राइट्स)' थीम पर आयोजित वार्ता कार्यक्रम और शांति मार्च का आयोजन किया गया था।

अपने-अपने देशों में मानवाधिकारों के हनन के कारण प्रताड़ना झेल रहे विभिन्न समुदायों के लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए और वहां अपनी कठिन परिस्थितियों के बारे में अनुभवों को व्यक्त किया। जापान में तिब्बती समुदाय और 'स्टूडेंट्स फॉर फ्री तिब्बत' ने तिब्बत की ओर से इस कार्यक्रम में भाग लिया और सीसीपी शासन के तहत तिब्बत में हो रहे मानवाधिकारों के उल्लंघन पर बात की। एसएफटी के कनाडा तारो ने कार्यक्रम का संचालन किया।

परम पावन दलाई लामा कार्यालय के संपर्क सचिव ताशी यांगज़ोम ने कार्यक्रम के लिए आयोजकों को धन्यवाद दिया और तिब्बत में चीनी अत्याचारों और निरंतर मानवाधिकारों के उल्लंघन के बारे में सभा को बताया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय और जापानी सरकार से अपील की कि वे चीनी सरकार से मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के सिद्धांतों को बनाए रखने और तिब्बत और अन्य चीनी कब्जे वाले क्षेत्रों में जनसंहार को रोकने का आग्रह करें।

दक्षिणी मंगोलिया, उग्यूर, चीन, हांगकांग, म्यांमार, कंबोडिया, यूक्रेन और ईरान के प्रतिनिधियों ने भी अपनी मातृभूमि में स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए अपने संघर्षों के बारे में अनुभवों को लेकर सभा को संबोधित किया। उन्होंने दुनिया भर में तानाशाही के खिलाफ एकजुट होकर लड़ने और अपने-अपने देशों में मानवाधिकारों और स्वतंत्रता को बहाल करने के बारे में भी विचार व्यक्त किए।

जापान में तिब्बती समुदाय संगठन के अध्यक्ष दोरजी शिओटा ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया और बताया कि कैसे सीसीपी का क्रूर शासन तिब्बतियों को उनके धार्मिक अधिकारों और मानवाधिकारों से वंचित कर रहा है। उन्होंने प्रतिभागियों से एकजुट होने और दुनिया भर के तानाशाहों को सही संदेश भेजने के लिए स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए एक साथ लड़ने का आग्रह किया ताकि उन्हें समझ में आए कि लोगों के लिए लोकतंत्र कितना अपरिहार्य है।

वार्ता कार्यक्रम के बाद बैनर, झंडे और तख्तियां लेकर विभिन्न समुदायों के लगभग दो सौ लोगों ने असाकुसा स्ट्रीट के आसपास शांति मार्च में निकाला। उन्होंने अपने मुद्दे को उठाने और अपने देशों में मानवाधिकारों की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए नारे लगाए। कई राहगीरों और पैदल चलने वालों ने एकजुटता और प्रशंसा का भाव दिखाया। शांति मार्च सुमिदा नदी के पास एक पार्क में शांतिपूर्वक समाप्त हुआ।

१८. यूरोपीय संघ ने तिब्बत में बिगड़ती स्थिति पर चिंता व्यक्त की

१३ दिसंबर, २०२४

ब्रुसेल्स। चीन में यूरोपीय संघ (ईयू) प्रतिनिधिमंडल ने अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के अवसर पर १० दिसंबर, २०२४ को एक बयान जारी किया, जिसमें वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए यूरोपीय संघ की प्रतिबद्धता को दोहराया गया था। बयान में चीन में मानवाधिकारों के हनन, विशेष रूप से तिब्बत के संदर्भ में हनन को लेकर उत्पन्न चिंताओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही तिब्बत में नागरिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वतंत्रता के क्षरण के बारे में यूरोपीय संघ की गंभीर चिंताओं को व्यक्त किया गया।

यूरोपीय संघ ने तिब्बती क्षेत्रों में भाषण, अभिव्यक्ति, आंदोलन और सभा की स्वतंत्रता पर लगाए गए गंभीर प्रतिबंधों पर प्रकाश डाला। क्योंकि वहां पर तिब्बतियों को असंतोष व्यक्त करने के उनके अधिकारों पर कड़ा नियंत्रण लगा है और ऐसा करने पर उन्हें कठोर दमन का सामना करना पड़ रहा है। बयान में तिब्बतियों को अंतरराष्ट्रीय यात्रा करने को लेकर लगाई गई पाबंदियों का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें पासपोर्ट प्राप्त करने पर प्रतिबंध और लामाओं जैसे तिब्बती धार्मिक नेताओं की आवाजाही पर कड़े नियंत्रण शामिल हैं।

यूरोपीय संघ ने धार्मिक गतिविधियों की निगरानी और उन पर प्रतिबंध सहित धार्मिक स्वतंत्रता के दमन पर चिंता व्यक्त की है। तिब्बती बौद्ध धर्म सरकार के बढ़ते नियंत्रण में दबा हुआ है। धार्मिक रीति रिवाजों को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) की विचारधारा के साथ जोड़ दिया गया है।

बयान में तिब्बती बच्चों के लिए अनिवार्य आवासीय स्कूलों की स्थापना को भी चिन्हित किया गया है, जहां बच्चों को उनके परिवारों से जबरन अलग कर दिया जाता है, जो तिब्बती सांस्कृतिक और भाषाई पहचान के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बती भाषा और संस्कृति को दबाने के प्रयासों के बारे में चिंता जताई, जिसमें गोलोग में जिग्मे ग्यालत्सेन नेशनलिटीज वोकेशनल स्कूल जैसे तिब्बती भाषा में पढ़ाने वाले स्कूलों को बंद करने का हवाला दिया गया। इस तरह के स्कूलों के बंद होने से मंदारिन-भाषा शिक्षा को बढ़ावा मिलने के साथ ही तिब्बत के सांस्कृतिक विनाश का खतरा उत्पन्न हो गया है।

यूरोपीय संघ ने छह तिब्बती राजनीतिक कैदियों (चाद्रेल रिनपोछे, आन्या सांगद्रा, गो शेरब ग्यासो, गोलोग पाल्डेन, सेमकी डोल्मा और ताशी दोरजे) की तत्काल और बिना शर्त रिहाई का अपना पुराना आह्वान दोहराया। इन लोगों को उनके द्वारा अपने मौलिक अधिकारों का उपयोग करने के एवज में मनमाने ढंग से हिरासत में लिया गया था। इसने निष्पक्ष सुनवाई के महत्व, 'निर्दिष्ट स्थान पर आवासीय निगरानी (आरएसडीएल)' जैसी परंपराओं के उन्मूलन और यातना और दुर्व्यवहार को समाप्त करने पर जोर दिया। मनमाने ढंग से हिरासत में लिए जाने को लेकर यूरोपीय संघ की चिंताएं तिब्बती राजनीतिक कैदियों को लेकर भी काफी हैं। विशेष रूप से उन लोगों को लेकर, जिन्हें तिब्बती अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए शांतिपूर्ण अभियान चलाने के खिलाफ गिरफ्तार किया गया है।

यूरोपीय संघ प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत के साथ अंतरराष्ट्रीय समुदाय के संलग्न होने की पुष्टि की और स्थिति की निगरानी करने और बातचीत को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय और नागरिक समाज संगठनों से अधिक से अधिक यात्रा करने को प्रोत्साहित किया। प्रतिनिधिमंडल ने ३९वें यूरोपीय संघ-चीन मानवाधिकार वार्ता के हिस्से के रूप में जून २०२४ में तिब्बत की यात्रा की, जो इस क्षेत्र में मानवाधिकारों की चिंताओं को उठाने में यूरोपीय संघ की निरंतर रुचि को प्रदर्शित करती है।

अंत में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस २०२४ पर यूरोपीय संघ के बयान में तिब्बत में मानवाधिकारों की स्थिति के बारे में उसकी निरंतर चिंता को रेखांकित किया गया है। प्रतिनिधिमंडल ने चीन से तिब्बतियों के अधिकारों का सम्मान करने और उनकी रक्षा करने का आह्वान किया और सांस्कृतिक संरक्षण, धार्मिक स्वतंत्रता और आत्म-अभिव्यक्ति के अधिकार के महत्व पर जोर दिया। यूरोपीय संघ ने चीन से अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार तंत्रों के साथ अधिक रचनात्मक रूप से जुड़ने और ऐसा माहौल बनाने का भी आग्रह किया, जहां तिब्बती स्वतंत्र रूप से अपने धर्म का पालन कर सकें और अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रख सकें।

◆ १९. यूरोप वी-टैग रणनीति बैठक के लिए युवा तिब्बती स्टॉकहोम में एकत्र हुए

०१ दिसंबर, २०२४

स्टॉकहोम (स्वीडन), ३० नवंबर २०२४। लंदन और ब्रुसेल्स में तिब्बत के कार्यालयों के कार्य-क्षेत्र के तहत आनेवाले छह देशों (स्वीडन, ब्रिटेन, नॉर्वे, फ्रांस, बेल्जियम और नीदरलैंड) से तिब्बती युवा संघ (वी-टैग) के ३० से अधिक युवा तिब्बती सदस्य तीन दिवसीय यूरोप वी-टैग रणनीति बैठक और प्रशिक्षण के लिए स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में एकत्र हुए। बैठक का आयोजन केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) द्वारा किया गया था और स्थानीय स्तर पर स्वीडन में तिब्बती समुदाय द्वारा सुविधाएं प्रदान की गई थी।

बैठक की शुरुआत में स्वीडन में तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष लोबसांग का स्वागत भाषण हुआ। इसके बाद डीआईआईआर में आधिकारिक प्रवक्ता और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अतिरिक्त सचिव तेनज़िन लेक्षय ने उद्घाटन भाषण दिया। अतिरिक्त सचिव लेक्षय ने तिब्बती आंदोलन में भविष्य के नेतृत्व के लिए युवाओं की क्षमताओं का निर्माण करने की आवश्यकता पर बल देते हुए तिब्बती मुद्दे के पक्ष में अभियान चलाने के लिए युवा तिब्बतियों को सशक्त बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला।

पहले दिन स्वीडिश-तिब्बत समिति के अध्यक्ष मटियास ब्योर्नरस्टेड ने एक वार्तालाप रखा, जिसमें उन्होंने यूरोप में तिब्बती पक्षधरता की चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा की। तिब्बती मुद्दे के साथ अपने व्यापक अनुभव का लाभ उठाते हुए ब्योर्नरस्टेड ने वर्तमान परिदृश्य और यूरोपीय जुड़ाव की भविष्य की क्षमता के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।
इस अवसर पर इंग्लैंड, बेल्जियम, फ्रांस और नीदरलैंड में वी-टैग समूहों के देश समन्वयकों ने भी अपनी रिपोर्ट रखी। इसमें पिछली गतिविधियों पर विचार किया गया और भविष्य के लिए उनकी योजनाओं की रूपरेखा तैयार की गई।

दोपहर में यूरोप में तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी) के कार्यकारी निदेशक वांगपो तेथोंग ने प्रभावी पक्षधरता पर एक प्रशिक्षण सत्र की अध्यक्षता की। इसमें प्रतिभागियों को समूह चर्चा में शामिल किया गया जिसका उद्देश्य उनकी पक्षधरता कौशल को मजबूत करना था।

इस सत्र का समापन सांस्कृतिक समारोह के साथ हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने

तिब्बत की जीवंत सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाले पारंपरिक तिब्बती नृत्य का आनंद लिया।

इस बैठक में निर्वासित तिब्बती संसद में यूरोप से निर्वाचित सदस्य थुप्टेन वांगचेन और थुप्टेन ग्यात्सो, फ्रांस में तिब्बत कार्यालय के समन्वयक थुप्टेन शेरिंग, लंदन में तिब्बत कार्यालय के सचिव तेनजिन कुंगा, ब्रुसेल्स में तिब्बत कार्यालय के यूरोपीय संघ समन्वयक तेनजिन फुंटसोक और डीआईआईआर के परियोजना अधिकारी न्गवांग चोएधर ने भाग लिया। बैठक का उद्देश्य पूरे यूरोप में तिब्बती युवाओं (वी-टैग) को और अधिक सशक्त बनाना, उन्हें तिब्बती मुद्दे के पक्ष में अभियान चलाने के काम को जारी रखने के लिए आवश्यक उपकरण और रणनीति प्रदान करना था।

◆ २०. जेल से रिहा होने के बाद तिब्बती भिक्षु की तबीयत खराब राचुंग गेंडुन ने दलाई लामा को प्रार्थना प्रसाद भेजने पर साढ़े तीन साल जेल में काटे।

२०२४.१२.०६ आरएफए, तिब्बत

तिब्बती बौद्ध भिक्षु को दलाई लामा और भारत के कीर्ति मठ के महंत को प्रार्थना प्रसाद के लिए पैसे भेजने के लिए जेल में डाला गया था। लेकिन तिब्बत की स्थिति से परिचित दो सूत्रों के अनुसार, उसे जेल से रिहा कर दिया गया है, क्योंकि उसकी तबीयत खराब बनी हुई है।

राचुंग गेंडुन को अप्रैल २०२१ में तिब्बती बौद्ध आध्यात्मिक नेता और मठ के महंत को कथित तौर पर दान भेजने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें साढ़े तीन साल जेल में बिताने के बाद १६ नवंबर को रिहा कर दिया गया।

चीनी अधिकारी तिब्बतियों के निर्वासित तिब्बतियों से संपर्क करने तक को अवैध मानते हैं। वे दलाई लामा के साथ किए गए संपर्कों के बारे में विशेष रूप से संवेदनशील हैं। दलाई लामा १९५९ में उत्तरी भारत भाग गए थे और तब से वहीं रह रहे हैं। तिब्बत के अंदर रहने वाले अनेक तिब्बतियों को दलाई लामा और अन्य तिब्बती धार्मिक हस्तियों के नाम पर धन दान और धार्मिक प्रसाद भेजने के लिए अतीत में उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है।

कई लोगों ने तिब्बती धार्मिक अभिव्यक्ति पर चीनी सरकार के दमन के बावजूद अपने आध्यात्मिक नेता में अपनी अटूट आस्था दिखाने के लिए चीनी अधिकारियों से संभावित नतीजों का जोखिम उठाते हुए भी ऐसा किया है।

तिब्बत के अंदर के सूत्र ने प्रतिशोध के डर से नाम न बताने की शर्त पर बताया कि गेंडुन की तबीयत खराब है और वर्तमान में सिचुआन प्रांत के चेंगदू के हाशी अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है।
सूत्र ने कहा, 'गेंडुन को अपने कारावास के दौरान काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिसमें उनकी ८५ वर्षीय मां की मृत्यु भी शामिल है। उनका १० जून, २०२४ को निधन हो गया।'

'उनकी मां को चीनी सरकार द्वारा कई बार परेशान किया गया था और दुख की बात है कि वह अपने बेटे को आखिरी बार देखने में सक्षम हुए बिना ही चल बसीं।'

विरोध प्रदर्शन का हथियार- आत्मदाह

गेंडुन के मामा तफुन द्वारा न्गाबा काउंटी में कीर्ति मठ के सुरक्षा कार्यालय के बाहर विरोध स्वरूप आत्मदाह करने के बाद गेंडुन की मां नॉर्पो को २७ मार्च, २०२२ को कड़े प्रतिबंधों और निगरानी का सामना करना पड़ा था।

चीनी सरकार ने नॉर्पो पर उसके भाई के आत्मदाह से पहले उनके साथ साजिश रचने का आरोप लगाया और उनकी स्वतंत्रता पर गंभीर रूप से अंकुश लगा दिया।

सूत्रों ने बताया कि लगभग एक साल तक नॉर्पो को चिकित्सा देखभाल, अस्पताल जाने और परिक्रमा जैसी धार्मिक प्रथाओं में शामिल होने की स्वतंत्रता सहित मौलिक अधिकारों से वंचित रखा गया था।

तिब्बतियों का मानना है कि परिक्रमा या किसी पवित्र स्थल के चारों ओर दक्षिणावर्त दिशा में घूमना की क्रिया पुण्य अर्जित करने और नकारात्मक कर्मों को शुद्ध करने के लिए की जाती है।

सूत्रों ने कहा कि प्रतिबंधों ने नॉर्पो की स्वास्थ्य स्थितियों को और खराब कर दिया। इससे पता चलता है कि चीनी नीतियों के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन से जुड़े तिब्बती परिवारों पर इस तरह के लगाए गए कठोर उपायों को उजागर करता है।

गेंडुन का मामला चीनी शासन के तहत तिब्बतियों के सामने चल रही चुनौतियों को उजागर करता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो दलाई लामा या विदेशों में तिब्बती धार्मिक संस्थानों से जुड़े हैं।

एक अन्य तिब्बती सूत्र ने बताया कि २०२१ में अपनी गिरफ़्तारी से पहले गेंडुन चीनी सरकार की 'देशभक्ति शिक्षा' अभियान का कड़ा विरोध कर रहे थे। गेंडुन उन लोगों में से थे जिन्होंने बीजिंग के उस अभियान का विरोध किया था, जिसमें तिब्बतियों से दलाई लामा की निंदा करने की मांग की गई थी, जिन्हें सरकार 'अलगाववादी' के रूप में देखती और खारिज करती है। इस अभियान की शुरुआत मार्च २००८ में ल्हासा से तिब्बती क्षेत्रों में फैली अशांति के बाद हुई थी। नतीजतन, उनसे पूछताछ की गई और उस समय कुछ महीनों के लिए हिरासत में रखा गया। चीनी अधिकारियों ने उनके रहने के क्वार्टर पर छापा मारा और दलाई लामा की तस्वीरें जब्त कर लीं।

◆ २१. हाउस ऑफ लॉर्ड्स ने तिब्बत की वास्तविक ऐतिहासिक स्थिति को सुनियोजित तरीके से मिटाने पर चिंता जताई

२३ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। पिछले गुरुवार को चीन-ब्रिटिश संयुक्त घोषणा की ४०वीं वर्षगांठ पर ब्रिटिश संसद के ऊपरी सदन- हाउस ऑफ लॉर्ड्स- के सदस्यों ने चीन के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीति पर चर्चा की। विशेष रूप से तिब्बत, हांगकांग, ताइवान और दक्षिण चीन सागर में चीनी कार्रवाइयों से उत्पन्न मानवाधिकारों और सुरक्षा मुद्दों के संबंध में और पूर्वी तुर्किस्तान में उग्यूरों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियानों के संबंध में चर्चा की गई।

सत्र के दौरान लॉर्ड डेविड एल्टन के नेतृत्व में हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्यों के एक समूह ने उपरोक्त क्षेत्रों में पीआरसी द्वारा मानवाधिकारों के निरंतर उल्लंघन के साथ-साथ सीमा पार दमन और जासूसी को बढ़ाने पर अपनी चिंता जताई। इस समूह में लॉर्ड मार्टिन कैलनन, बैरोनेस स्मिथ, लॉर्ड बिशप और बैरोनेस बैनेट

शामिल थे। समूह ने चीन के प्रति ब्रिटिश सरकार की नीतियों के विभिन्न पहलुओं की भी समीक्षा की।

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि लॉर्ड मार्टिन कैलनन ने तिब्बत की वास्तविक ऐतिहासिक स्थिति को वैश्विक चेतना से सुनियोजित तरीके से मिटाने के पीआरसी के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 'तिब्बती संस्कृति, धर्म और पहचान को मिटाने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का दशकों पुराना अभियान अंतरराष्ट्रीय समुदाय की अंतरात्मा पर एक दाग है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बहुत समय पहले तक तिब्बत एक स्वतंत्र देश था। लेकिन अब कोई भी इसे इस रूप में नहीं जानता है। यह वास्तव में चीन में समाहित हो गया है और तिब्बती लोगों को धीरे-धीरे मिटा दिया गया है। मुझे कुछ साल पहले धर्मशाला स्थित निर्वासित घर में दलाई लामा से मिलने का सम्मान मिला था। मैं उनके धर्म को नहीं मानता, लेकिन वे एक प्रेरणादायक चरित्र हैं, जो तिब्बती लोगों के सामने आने वाले सभी खतरों और वास्तव में जनसंहारों के बावजूद अहिंसा का उपदेश देते रहे हैं।'

२२. एक बांध के निर्माध से धधक उठा तिब्बती विरोध। बीबीसी के अनुसार, इसका अंत प्रदर्शनकारियों की पिटाई और गिरफ्तारी के साथ हुआ

२३ दिसंबर, २०२४ - टेसा वोंग, बीबीसी समाचार, एशिया डिजिटल रिपोर्टर

बीबीसी को सूत्रों और सत्यापित फुटेज से पता चला है कि इस साल की शुरुआत में एक चीनी बांध के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे सैकड़ों तिब्बतियों को कठोर कार्रवाइयों का सामना करना पड़ा। इनमें से कुछ को बर्बरता के साथ पीटा गया और वे गंभीर रूप से घायल हो गए।

तिब्बत में इस तरह के विरोध प्रदर्शन बेहद कम देखने को मिलते हैं। क्योंकि इस तरह के विरोध- प्रदर्शनों पर चीन ने १९५० के दशक में इस क्षेत्र पर कब्जा करने के बाद से कड़ा नियंत्रण लगा रखा है। फिर भी ऐसे विरोध का होना लंबे समय से संवेदनशील क्षेत्र में बांध बनाने के चीन के विवादास्पद प्रयास को उजागर करता है। फरवरी की घटनाओं के तुरंत बाद गिरफ्तारी और मारपीट के दावे सामने आने लगे। आनेवाले दिनों में प्राधिकारियों ने प्रतिबंधों को और कड़ा कर दिया, जिससे किसी के लिए भी इस कहानी की पुष्टि करना मुश्किल हो गया, विशेषकर पत्रकारों के लिए। क्योंकि वे तिब्बत में स्वतंत्र रूप से यात्रा नहीं कर सकते।

लेकिन बीबीसी ने महीनों से तिब्बती स्रोतों का पता लगाने में अपने सारे घोड़े खोल रखे हैं, जिनके परिवार और दोस्तों को हिरासत में लिया गया और पीटा गया। बीबीसी वेरिफाई ने भी सैटेलाइट इमेजरी और सत्यापित लीक वीडियो की भी जांच की है, जिसमें बड़े पैमाने पर विरोध-प्रदर्शन और भिक्षुओं को अधिकारियों से दया की भीख मांगते हुए दिखाया गया है।

स्रोत व्यक्ति चीन के बाहर रहते हैं और कार्यकर्ता समूहों से जुड़े नहीं हैं। लेकिन वे सुरक्षा कारणों से अपना नाम उजागर नहीं करना चाहते थे।

हमारे प्रश्नों के उत्तर में ब्रिटेन में चीनी दूतावास ने विरोध-प्रदर्शनों या उसके बाद की कार्रवाई की न तो पुष्टि की और न ही खंडन किया।

लेकिन इसने कहा, 'चीन कानून के शासन के आधार पर चलने वाला देश है और नागरिकों के कानूनी रूप से अपनी चिंताओं को व्यक्त करने और राय या सुझाव देने के अधिकारों की सख्ती से रक्षा करता है।'

२३. तिब्बत की लारुंग गार बौद्ध अकादमी पर प्रतिबंध बढ़ा, सेना का जमाबड़ा बढ़ाया

२७ दिसंबर, २०२४

धर्मशाला। तिब्बत से हाल ही में प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार, चीन ने दुनिया के सबसे बड़े तिब्बती बौद्ध अध्ययन केंद्र लारुंग गार बौद्ध अकादमी में बड़ी संख्या में सैन्य बल तैनात कर दिए हैं। लारुंग गार मठ तिब्बत के पारंपरिक खाम प्रांत के करज़े के सेरथर (चीनी: सेडा) काउंटी में स्थित है, जिसे सिचुआन प्रांत में शामिल किया गया है।

ड्रैकगो (चीनी: लुहुओ) और करज़े (चीनी: गंजी) के पड़ोसी काउंटियों से लगभग ४०० चीनी सैनिक २० दिसंबर २०२४ को लारुंग गार पहुंचे। तैनाती के साथ हेलीकॉप्टर निगरानी भी की गई, जो धार्मिक स्थल पर निगरानी गतिविधियों में तेजी लाने का संकेत है।

विश्वसनीय सूत्रों से पता चलता है कि २०२५ से नए कड़े नियमों की योजना बनाई गई है। ये नीतियां कथित तौर पर लारुंग गार में निवास को अधिकतम १५ वर्षों तक सीमित कर देंगी और सभी भिक्षुओं और भिक्षुणियों के पंजीकरण को आवश्यक बना दिया जाएगा। इसके अलावा, अधिकारी संस्था में धार्मिक अनुयायियों की संख्या कम करने की योजना बना रहे हैं। चीनी छात्रों को कथित तौर पर मठ छोड़ने के लिए कहा जा रहा है, जो मठ की आबादी को कम करने के चीनी सरकार के दृष्टिकोण की ही पुष्टि करता है।

यह नई सरकारी गतिविधि लारुंग गार में व्यवस्थित प्रतिबंधों के पैटर्न के अनुरूप है। लारुंग गार में इससे पहले २००१ और २०१६-२०१७ में बड़ी कार्रवाई की गई थी। इस दौरान हजारों आवासीय इमारतों को ध्वस्त कर दिया गया था और कई साधकों को वहां से जबरन बेदखल कर दिया गया था।
लारुंग गार को दुनिया का सबसे बड़ा तिब्बती बौद्ध संस्थान कहा जाता है। १९८० में स्थापित अकादमी और मठ पूर्वी तिब्बत के सेरथर काउंटी में एक पहाड़ी पर अवस्थित है। यहां हजारों बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियां आती हैं और यहां उन्हें शिक्षा दी जाती हैं। इस प्रसिद्ध संस्थान का विध्वंस २० जुलाई २०१६ को शुरू हुआ और मई २०१७ की शुरुआत तक जारी रहा। लारुंग गार की आबादी पिछले वर्षों में उसकी मूल आबादी लगभग १०,००० से लगभग आधी रह गई है।

नवीनतम प्रतिबंधात्मक गतिविधि तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने के चीन के व्यापक अभियान में वृद्धि के संकेत हैं। यहां पारंपरिक बौद्ध संस्थाओं को धार्मिक परंपराओं और शिक्षा को नियंत्रित करने के उद्देश्य से सरकार की नीतियों के तहत बढ़ते दबाव का सामना करना पड़ रहा है।